गांवोंकी मददमें

गांधीजी

अनुवादक
सोमेश्वर पुरोहित

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद–१४

चिरंतन महत्त्वका चिन्तन

गांधीजीके चलाये हुअे साप्ताहिक गुजराती 'नवजीवन' के साथ मैंने सन् १९२९ में 'शिक्षण और साहित्य' नामकी अेक पूर्ति शुरू की, जिसका अुद्देश्य अुसके नामसे ही स्पष्ट होता था। अुस पूर्तिमें मैंने पूज्य गांधीजीसे अेक लेखमाला मांगी, जिसमें अुनके ग्रामोद्धार विषयक विचार पाठकोंको मिल सकें।

'जगतका तात' शीर्षकवाली अेक अलग लेखमाला भी गांधीजीने किसानोंके बारेमें लिखी थी। अिन दो लेखमालाओंके साथ ग्रामीण सवालोंकी चर्चा करनेवाले समय समय पर लिखे हुअे अुनके अनेक लेख मिलाकर अेक छोटीसी किताब हमने तैयार की और अुसका नाम रखा 'गामडानी वहारे'। 'वहारे' माने 'मददमें'। लेकिन 'वहारे' शब्दका पूरा भाव व्यक्त करनेके लिअे हिन्दीका कोअी शब्द हमारे पास नहीं है।

'धींग पडे रजपूत छिपे नहीं' अिस कहावतमें संकटके समय मदद मांगनेवाली पुकारके लिअे जैसा हिन्दी शब्द 'धींग' है अुसी तरह संकटके समयकी चीख या टेर सुनते ही सब बातें छोड़कर मददके लिअे दौड़ जानेकी क्रियाको गुजरातीमें कहते हैं 'वहारे धावु'— मददको दौड़ जाना।

भारतमें किसानोंकी हालत कभी भी अच्छी नहीं थी, तो भी प्राचीन कालकी ग्रामीण संस्कृतिके दिनोंमें किसानोंका शोषण नहीं होता था। किसान ही समस्त प्रजाका भरण-पोषण करता था। वह स्वावलम्बी, सुखी और समर्थ था। संस्कृतिके शुभ संस्कारोंसे वह वंचित नहीं था। राजाओंके छोटे-बड़े नगर दरअसल गांवोंके आश्रित थे। गांवोंको चूसनेकी कला बिलकुल प्राथमिक अवस्थामें थी। अिसलिअे गांवोंमें जीवनका सौख्य और सौभाग्य काफी मात्रामें पाया जाता था। स्वावलंबनके पुरुषार्थके बिना शाश्वत श्री ही नहीं सकते थे। अिसलिअे हमारे गांवोंमें देशके और धर्मके अच्छे अच्छे नेता भी पैदा होते थे।

लेकिन यह स्थिति धीमे धीमे बदलती गअी, बिगड़ती गअी। गांवोंका शोषण करनेवाले शहरोंकी शक्ति बढ़ने लगी। राजनीतिक सामर्थ्य तो शहरोंमें ही रहता था। वहां अुद्योग, हुनर और कला-कौशल्य अिकट्ठा होने लगे। विलासिता बढ़ी। विलासिताकी अभद्रताको ढांकनेके लिअे कृत्रिम संस्कृति-

ही सामर्थ्य पर गावोंका अुद्धार हम कैसे कर सकते हैं, यह बतानेकी कोशिश गांधीजीने अिस लेखमालामें की है। अिसीलिअे यह लेखमाला अत्यंत महत्त्वका चिरन्तन साहित्य बन गअी है।

जब स्वराज्य नहीं था, स्वराज्य पानेकी अुम्मीद भी लोगोंमें दृढ़मूल नहीं हुअी थी, तब ये लेख गांधीजीने लिखे थे। चिरदिन-वंचित, अंतर-संचित हमारी आशायें आविष्कार गांधीजीके जीते-जी सफल हो चुकीं। देशमें स्वराज्यकी स्थापना हुअी। बाहरी 'जीवलेण' (जानलेवा) शोषण बन्द हुआ। स्वदेशी कला-कौशल्यको प्रोत्साहन मिलने लगा। राष्ट्रकी बुद्धि-शक्ति, धनशक्ति और संगठन-शक्ति अब लोकोद्धारकी अनेक योजनाओंमें जुट गअी है। तो भी गांवोंके सवालका अभी हल नहीं हुआ है। नवचिन्तन और नवजीवन गांवों तक नहीं पहुंचा है।

कहते हैं कि सहाराके रेगिस्तानमें कभी कभी बारिश तो होती है, लेकिन वह बीचकी हवामें ही सूख जाती है, जमीन तक पहुंचती ही नहीं। हवामें ठंडक आती है, लेकिन रेतीवाली भूमि गरम और प्यासी ही रहती है। चन्द बातोंमें हमारे गांवोंकी स्थिति आज वैसी ही है। चंद बातोंमें स्थिति सुधरी है, तो चंद बातोंमें वह विशेष बिगड़ भी गअी है। अब हम सरकारके खर्चेसे और शायद परदेशसे पैसा अुधार लेकर भी देशकी और गांवोंकी हालत सुधारनेकी कोशिश कर रहे हैं। गांधीजीकी सर्वोदय प्रवृत्ति और अुसे चलानेवाला सर्व-सेवा-संघ, भारत सेवक समाज, सरकारकी ओरसे चलनेवाले कम्यूनिटी प्रोजेक्ट, सोशल वेलफेअर बोर्ड आदि अनेक संस्थायें अब ग्रामोद्धारका काम चला रही हैं। खर्चा तो बहुत होता है। ग्रामोद्धारका साहित्य भी जोरोंसे बढ़ रहा है। तो भी अिस किताबमें दी हुअी गांधीजीकी मूलभूत सूचनायें आज भी अुतना ही महत्त्व रखती हैं, जितना बीस-पचीस बरसके पहले रखती थीं। शायद अितने सालोंके अनुभवके बाद गांधीजीकी सूचनाओंका महत्त्व आज हम ज्यादा समझ सकते हैं।

गांधीजी गांवकी हालत तो सुधारना चाहते ही थे, लेकिन अुससे भी अधिक ग्रामीण जनताकी और अुसकी सेवा करनेवाले सेवकोंकी संस्कृता और अुनकी मानवता बढ़ाना चाहते थे। अिसीलिअे अिन सूचनाओंका जितना महत्त्व है अुससे भी अधिक महत्त्व अिन सूचनाओंके पीछेकी दृष्टिका है।

अृषिकी वाणी

अंग्रेज यहां आये अुससे पहले हिन्दुस्तान अपने लाखों-करोडों झोंपडोंमें सूत कातता था और अुसका कपडा बुनता था। और अिस तरह खेतीसे होनेवाली अपनी छोटीसी आयकी कमी पूरी कर लेता था। अिस प्रकार यह गृह-अुद्योग भारतकी प्रजाकी जीवन-डोर बन गया था। अिस अुद्योगका अंग्रेजोंने अैसे कठोर और गहरे अुपायोंसे नष्ट किया, जिन पर भरोसा करना कठिन होता है। अिन कठोर अुपायोंका वर्णन अैसे अंग्रेजोंने किया है जिन्होंने अपनी आखोंसे यह सब देखा है। भारतकी भूखे पेट रहकर दिन काटनेवाली आम जनता कैसे धीरे धीरे मौतके किनारे पहुंचती जा रही है अिसका शहरमें रहनेवाले लोगोंको शायद ही पता होगा। शहरी लोग यह नहीं जानते कि मामूली-सा जो अैश-आराम वे भोगते हैं, वह भारतको चूसनेवाले विदेशी पूंजीपतियोंका घर भरनेके लिअे वे जो मेहनत करते हैं अुसकी दलालीके सिवा और कुछ नहीं है। विदेशी पूंजीपतियोंका सारा मुनाफा और शहरी लोगोंकी दलाली दोनों हिन्दुस्तानकी गरीब जनताको चूसकर ही निकाले जाते हैं। अुन्हें पता नहीं है कि ब्रिटिश भारतमें कानूनके बल पर कायम की गओी विदेशी सरकार देशकी गरीब जनताको अिस तरह चूसनेके लिअे ही चलाओी जाती है। आज हिन्दुस्तानके गांव अपने चलते-चालते हाड-पिंजरोंसे हमारी आंखोंके सामने जो सबूत पेश कर रहे हैं, अुसे चाहे जैसे विवादों या भुलावेमें डालनेवाले आकडों या रिपोर्टोंके बल पर अुडाया नहीं जा सकता। मेरे मनमें तो अिस बारेमें जरा भी शक नहीं है कि अगर भगवान जैसा कोअी मालिक दुनियाके कामकाजको देखनेवाला होगा, तो अुसके दरबारमें अिंग्लैण्डको और हिन्दुस्तानके शहरोंमें बसनेवाले अिन सब दलालोंको अपने अिस अपराधके लिअे — अितिहासमें जिसकी मिसाल न मिल सके अैसे मानव-जातिके खिलाफ किये जानेवाले अिस अपराधके लिअे — जरूर जवाब देना पडेगा।

— गांधीजी

[१९२२ में अदालतके सामने दिये गये बयानसे]

अनुक्रमणिका

१. गांवोंकी शिक्षा

काकासाहब कालेलकर जिस पूर्ति*से कअी मकसद पूरे करना चाहते है। अुनमें से अेक मकसद यह है जिस पूर्तिके जरिये महागुजरातके लगभग १० हजार गावोंके अैसे स्त्री-पुरुषोंको भरसक शिक्षा मिलनी चाहिये, जो आम तौर पर अक्षर-ज्ञानकी — पढ़ने-लिखनेकी — मानी जानेवाली अुमर पार कर चुके है, ससारी जीवन बिताते है और किसी न किसी काम-धन्धेसे लगे हुअे है। अैसी शिक्षाका अुदार और व्यापक अर्थ करना होगा। यह शिक्षा अक्षर-ज्ञानसे परे है। आजकी दृष्टिसे देखा जाय तो गावके लोगोंको अनेक बातोंका व्यवहारमें काम आनेवाला ज्ञान नही होता। अुनके जीवनमें अकसर अज्ञानसे भरे वहमों और अन्ध-विश्वासोंका बोलबाला रहता है। गावके लोगोके ये वहम और अध-विश्वास मिटें और जीवनमें काम आनेवाला ज्ञान अुन्हे मिले — यही मकसद जिस पूर्तिके जरिये काकासाहब पूरा करना चाहते हैं।

आरोग्य — तन्दुरस्ती — की दृष्टिसे ग्रामवासियोंकी हालत बडी दर्दनाक है। आरोग्यके जरूरी और सरलतासे मिल सकनेवाले ज्ञानका अभाव हमारी गरीबी और कगालीका अेक बडा और जोरदार कारण है। अगर गावोंका आरोग्य सुधारा जा सके तो लाखों रुपये आसानीसे बच सकते हैं, और अुस हद तक लोगोंकी आर्थिक दशा सुधर सकती है। स्वस्थ, तन्दुरस्त और हट्टे-कट्टे किसान जितना काम कर सकते है, अुतना रोगी किसान कभी नही कर सकते। हमारे देशमें मौतकी सख्या ज्यादा होनेसे हमें कोअी कम नुकसान नही अुठाना पडता।

---

* काकासाहब कालेलकरकी अिच्छासे गाधीजीने गुजराती साप्ताहिक 'नवजीवन' की 'शिक्षण अने साहित्य' नामक पूर्ति जुलाअी १९२९ से निकालना शुरू किया था। अिस पूर्तिको ग्रामजनोंकी व्यापक शिक्षाकी दृष्टिसे अधिकसे अधिक अुपयोगी बनानेका प्रयत्न किया गया था।

यह टेव कितनी ही पुरानी क्यों न हो, फिर भी बुरी टेव है, और अुसे दूर करना ही चाहिये। मनुस्मृति जैसे हिन्दू धर्मशास्त्रोंमें, कुरान शरीफमें, बाअिबलमें और जरतुश्तके आदेशों और फरमानोंमें गावके रास्तों, घरोंके आगनों, घरों, नदी-नालों तथा कुओं और तालाबोंको गन्दे न करनेके बारेमें बारीकीसे अनेक सूचनायें दी गअी है। परन्तु अिस समय तो हम अुन सूचनाओंका अनादर ही करते है। यहा तक कि हमारे तीर्थस्थानोंमें भी काफी गदगी पायी जाती है। यदि अैसा कहा जाय कि तीर्थस्थानोंमें ज्यादा गदगी होती है, तो शायद वह भी अधिक नही होगा।

हरद्वारमें मैंने हजारो स्त्रियों और पुरुषोंको गंगाका किनारा बिगाड़ते देखा है। जिस स्थान पर लोग बैठते है अुसी स्थान पर यात्री टट्टी फिरते है, अपने मुह-हाथ गंगामें घोते है और बादमें वहीसे पीनेका पानी भरते है। तीर्थस्थानोंके तालाबोको भी अिसी तरह गन्दा करते मैंने यात्रियोको देखा है। अैसा करनेमें दया-धर्मका नाश होता है और समाज-धर्मकी अुपेक्षा होती है।

अिस तरहकी लापरवाहीसे आसपासकी हवा बिगडती है और पानी भी बिगडता है। फिर अगर लोगोको हैजा, मोतीझिरा वगैरा छुतहे रोग हो तो अचरज कैसा? हैजेके रोगका जन्म ही गन्दे पानीसे होता है। मोतीझिरेके बारेमें भी बहुत हद तक यही कहा जा सकता है। सौमें से लगभग पचहत्तर रोग हमारी गन्दी आदतोंके कारण होते हैं, अैसा कहना अधिक नही होगा।

अिस कारणसे ग्रामसेवकका पहला कर्तव्य गावके लोगोंको स्वच्छताकी, सफाअीकी शिक्षा देना है। यह शिक्षा देनेमें भाषण करने और पत्रिकायें निकालनेका कमसे कम स्थान है। अिनसे कोअी लाभ नही होगा। क्योंकि गावोंमें गन्दगीने अैसी जड जमा ली है कि गांववासी ग्रामसेवककी बात सुननेको तैयार ही नही होते। और अगर वे सुनते भी हैं तो वैसा करनेका अुत्साह अुनमें नही होता। पत्रिकायें बांटी भी जायं तो लोग अुन्हें पढते नहीं। बहुतसे लोग पढ़ना जानते भी नहीं। और नयी बात जाननेकी

शिक्षा न होनेके कारण गावमें जो पढना जानते है अुनसे लोग अैसी पत्रिकायें पढवाते भी नही।

अिसलिअे ग्रामसेवकका धर्म यह हो जाता है कि वह खुद स्वच्छ रहे, अपना घर-आगन साफ रखे, गावकी गदगी साफ करनेका प्रयत्न करे और अिस तरह अपने आचरणसे गाववालोको सफाअीका पाठ सिखाये। गावके लोगोंसे जो कुछ कराना हो वह ग्रामसेवक अपने जीवनमें स्वय करके बताये, तो ही वे लोग सेवकका कहा मानेंगे और अुस पर अमल करेंगे। और तब वे जरूर करेंगे, अिस विषयमें कोअी ग्रामसेवक अपने मनमें जरा भी शका न रखे। अैसा करने पर भी धीरज रखना तो जरूरी होगा ही। दो दिन हमने सेवा की अिसलिअे गावके लोग अपने-आप सफाअी रखने लग जायगे, अैसा मान लेनेका कोअी कारण नही है।

सबसे पहले ग्रामसेवकको अुन्हे अिकट्ठा करके अुनका फर्ज समझाना चाहिये। और अुसी समय अुनमें से कोअी स्वयसेवक मिले या न मिले, अुसे स्वय तो सफाअी-काम शुरू कर ही देना चाहिये। अुसे सफाअीके साधन फावडा, टोकरी या बालटी, झाडू और कुदाली सब गावमें से ही जुटा लेने चाहिये। ये चीजें वापस लौटा दी जायगी अिसका विश्वास करा देनेके बाद ग्रामजन जिन्हे देनेसे अिनकार नही करेंगे।

अब ग्रामसेवक गावके रास्तोंकी जाच करेगा और जहा भी मल-मूत्र पडा होगा वहा अुसकी सफाअीमें लग जायगा। मल तो वह फावडेकी मददसे अपनी टोकरीमें अिकट्ठा करेगा और अुस जगहको मिट्टीसे ढंक देगा। जहा पेशाब की गअी होगी वहासे भी फावड़ेकी मददसे वह अूपरकी गीली मिट्टी अपनी टोकरीमें ले लेगा और अुस स्थान पर आसपासकी साफ मिट्टी फैला देगा। आसपास कूडा-कचरा होगा तो झाड़ूकी मददसे अुसे अिकट्ठा करके अेक कोनेमें अुसका ढेर लगा देगा, और मलको — पाखानेको — अुसकी नियत जगह पर डाल आनेके बाद अुसी टोकरीमें कचरा भरेगा और अुसे भी अुसकी जगह पर पहुचा देगा।

अिस पाखानेको कहा डाला जाय यह बडे महत्त्वका सवाल है। अिसमें स्वच्छता और अर्थ यानी पैसेकी बात समायी हुअी है। बाहर खुला पडा हुआ पाखाना बदबू फैलाता है। अुस पर मक्खिया बैठती है,

जो आकर हमारे शरीर पर या हमारे भोजन पर बैठती हैं और चारों ओर रोगके जन्तु फैलाती हैं। अगर अिस क्रियाको हम सूक्ष्म-दर्शक यंत्रसे — बारीक जन्तुओंको बड़े आकारमें दिखानेवाले यंत्रसे — देखें, तो हम जो मिठाओ वगैरा अनेक चीजें खाते हैं अुन पर हमें रोगके अितने जन्तु दिखाओ पड़ेंगे कि अुन्हें खाना हम सदाके लिये छोड़ देंगे।

यह पाखाना किसानोंके लिये सोने जैसा कीमती है। अिसे खेतमें डालनेसे अिसका सुन्दर और कीमती खाद बनता है और बहुत बढ़िया फसल पैदा होती है। चीनके लोग अिस काममें सबसे ज्यादा कुशल हैं। कहा जाता है कि वे लोग पाखाने और पेशाबका सोनेकी तरह संग्रह करके करोड़ों रुपये बचाते हैं और साथ ही अनेक रोगोंके शिकार होनेसे बच जाते हैं।

अिसलिये ग्रामसेवकको यह बात किसानोंको समझानी चाहिये और जो लोग अिजाजत दें अुनके खेतमें पाखाना गाड़ देना चाहिये। अगर कोओ किसान अज्ञानके कारण स्वच्छताकी रक्षा करनेवाली ग्रामसेवककी यह बात न माने, तो वह पाखानेको गावके घूरे पर अेक अुचित जगह खोज कर गाड दे। अितना करनेके बाद वह कचरेके ढेरके पास जायगा।

कचरा दो तरहका होता है। अेक, खादके लायक; जैसे शाक-भाजीके छिलके, अनाज, घास वगैरा। दूसरा लकड़ी, पत्थर, टीन वगैराका। अिसमें से खादके लायक कचरा खेतमें डालना चाहिये या अैसी जगह डालना चाहिये जहा अुसका खाद अिकट्ठा किया जा सके। दूसरी तरहका कचरा अैसी जगह ले जाकर गाड़ना चाहिये जहा खड्डे वगैरा पूरना जरूरी हो। अैसा करनेसे सारा गाव साफ रहेगा और खुले पैर चलनेवाले लोग निडर होकर चल सकेंगे। थोड़े दिनकी मेहनतके बाद गावके लोग अिस कामकी कीमत अवश्य ही समझ जायगे। और जब समझ जायगे तो अिस काममें वे मदद भी करने लगेंगे; और अन्तमें स्वयं ही सफाओ-काम करने लग जायगे। हरअेक किसान स्वयं अपने परिवारके लोगोके पाखानेका अुपयोग अपने खेतमें करेगा, अिसलिये किसी पर किसीका बोझ नही पडेगा, और सभी किसान बढ़िया और कीमती फसल पैदा करने लग जायगे।

रास्तेमें पाखाना फिरनेकी टेव कभी न डालनी चाहिये। खुली जगहमें सबके देखते हुअे पाखाना फिरना या बच्चोंको भी फिराना असभ्यताकी निशानी है। जिस असभ्यताका भान हमें रहता है, क्योंकि अैसे समय कोअी हमारी ओर आता दिखाअी पड़ता है तब हम शरमसे नीचे देखने लगते हैं। अिसलिअे हर गांवमें किसी अेक स्थान पर सस्तेसे सस्ते पाखाने बनवाने चाहियें। घूरेकी जगहका ही अैसा अुपयोग हो सकता है। अिस जमा हुअे खादको किसान अपने हिस्सेमें आये अुस हिसाबसे आपसमें बांट लें। और जब तक किसान खुद अैसी व्यवस्था न करने लगें, तब तक ग्रामसेवकका यह फर्ज होगा कि वह गांवके रास्तोंकी तरह घूरेकी भी सफाअी करे। रोज सुबह गांववासी पाखानोंका अुपयोग कर लें अुसके बाद किसी नियत समय पर वह घूरे पर जाकर सारा मैला अिकट्ठा करे और अूपर बताये अनुसार अुसकी व्यवस्था कर दे। अगर मैला गाड़नेके लिअे कोअी खेत न मिले तो जहां अुसे गाड़ा गया हो वहां अेक निशानी बना देनी चाहिये। अैसा करनेसे रोज मैला गाड़नेमें सुविधा रहेगी और जब किसान समझ लेंगे तब अिस जमा हुअे खादका वे अुपयोग कर सकेंगे।

अिस मैलेको बहुत गहरा कभी नहीं गाड़ना चाहिये। धरतीकी ९ अिंच तककी परतमें असंख्य परोपकारी जन्तु रहते हैं। अुनका काम अितनी गहराअीमें जो कुछ हो अुसका खाद बनाना और सारी गन्दगीको शुद्ध करना है। सूरजकी किरणें भी रामके दूतकी तरह बड़ी भारी सेवा करती हैं। जिसे अिस बातकी परीक्षा करनी हो वह खुद अपने अनुभवसे कर सकता है। थोड़ा मैला ९ अिंचकी गहराअीमें गाड़कर अेक हफ्ते बाद जमीनको खोल कर देखना चाहिये और अुसमें क्या फेर-बदल होता है अुसे ध्यानमें लेना चाहिये। अुसी मैलेका थोड़ा दूसरा भाग जमीनमें ३ या ४ फुट गहरा गाड़ना चाहिये और अुसके क्या हाल होते हैं अिसकी जांच करनी चाहिये। यह अनुभवसे मिला ज्ञान होगा। मैलेको जमीनमें छिछला ही गाड़ना चाहिये, लेकिन अुस पर मिट्टी अच्छी तरह दबा देनी चाहिये, जिससे कुत्ते अुसे खोद न सकें और मैलेकी बदबू न आवे। कुत्ते खोद न सकें अिस खयालसे खड्डेको ढकनेके बाद अुस पर थोड़ी कांटोंकी डालियां रख देना अच्छा होगा।

जब मैलेको छिछला गाड़नेकी बात कही तब यह समझ लेना चाहिये कि मैलेके लिअे चौरस या लम्ब-चौरस अेक बड़ा खड्डा होना चाहिये। क्योंकि गाड़े हुअे मैले पर दूसरा मैला तो चढ़ाना नहीं है, और न तुरन्त अुसे खोलना है। अिसलिअे पहले दिन जहां मैला गाड़ा गया हो अुसके नजदीक ही दूसरा अेक छोटा चौरस खड्डा तैयार करना चाहिये। अुसमें से निकाली गअी मिट्टी अुसके अेक कोने पर अिकट्ठी कर देनी चाहिये। दूसरे दिन आकर मैला अिस खड्डेमें गाड़ना चाहिये, किनारे पर पड़ी मिट्टी अुस पर ढाक देनी चाहिये और खड्डेको समतल बना कर चले जाना चाहिये। अिसी ढगसे शाक-भाजीके छिलकों वगैराके कचरेका खाद तैयार करना चाहिये, लेकिन पासकी दूसरी जगहमें। क्योंकि मैले और शाक-भाजी वगैरा हरी वनस्पतिका कचरा अेक साथ नहीं गाड़ा जा सकता। दोनों पर जमीनके भीतरके जन्तु अेकसी क्रिया नहीं करते। अब ग्रामसेवक समझ गया होगा कि जिस जगह वह मैला गाड़ता है वह जगह हमेशा साफ रहेगी, समतल रहेगी और ताजे जुते हुअे खेतके जैसी मालूम होगी।

अब बचता है अुस कचरेका ढेर जिसका खाद नहीं बन सकता। अुस ढेरका कचरा अेक ही गहरे खड्डेमें गाड़ना चाहिये या गांवके आस-पास जो खड्डे भरने हों अुनमें गाड़ देना चाहिये। अिस कचरेको भी रोज गाड़ना चाहिये, मिट्टीसे दबाना चाहिये और खड्डे तथा आसपासकी जगहको साफ रखना चाहिये।

अिस प्रकार अेक महीने तक काम करनेसे ज्यादा परिश्रम किये बिना ही गांव घूरे जैसे गन्दे न रह कर साफ-सुथरे और सुन्दर बन जायंगे। पाठक समझ गये होंगे कि अिसमें पैसा खर्च करनेकी तो कोअी बात ही नहीं है। अिसमें न तो सरकारकी मददकी जरूरत है और न विज्ञानकी भारी शक्ति और ज्ञानकी जरूरत है। जरूरत केवल प्रेमल स्वभाववाले ग्रामसेवककी है।

यह कहना आवश्यक नहीं है कि जो बात मनुष्यके मैले और पेशाबको लागू होती है वही ढोरोंके गोबर और मूतको भी लागू होती है। लेकिन अिसका विचार हम अगले प्रकरणमें करेंगे।

३. अुपले या खाद?

पिछले प्रकरणमें हमने मनुष्यके मैले-पेशाबका विचार कर लिया। गाय-भैंस वगैरा जानवरोंके मूतका हम कोअी अुपयोग नही करते, अिसलिअे वह गदगी बढानेका ही काम करता है। गोबरका अुपयोग ज्यादातर अुपले बनानेमें किया जाता है। गोबरका यह बुरा अुपयोग भले न हो, फिर भी यह अुसका कमसे कम अुपयोग है, अिस बारेमें शका करनेका बिलकुल कारण नही है। यह छोटेसे लाभके लिअे बहुत बडा नुकसान अुठानेका धन्धा है। अुपलेका अगार ठडा या धीमी आचवाला माना जाता है। हुक्का और चिलम पीनेवाले अिसका अुपयोग करते है। पजाबके लोगोका अैसा विश्वास है कि अुपलोंकी आग पर घी अच्छा तैयार होता है। अिसमें थोडी सचाअी हो भी सकती है। लेकिन ये सारी दलीलें सिर्फ अिसलिअे दी जाती है कि गोबरका अुपयोग हम अुपले बनानेमें करते है। यदि गोबरका हम पूरा पूरा अुपयोग करते हो तो धीमी आग करनेके कअी साधन खोजे जा सकते है। अगर अेक अुपलेकी कीमत अेक पाअी होती हो, तो गोबरका पूरा अुपयोग करनेसे अेक अुपलेमें काम आनेवाले गोबरकी कीमत कमसे कम दस गुनी बढ जाती है। और यदि हम आखोंसे दिखाअी न देनेवाले नुकसानका हिसाब भी लगायें, तो अुस नुकसानकी कीमत आकना कठिन है।

गोबरका पूरा अुपयोग अुसका खाद बनानेमें ही है। खादीशास्त्रके जानकारोंका मत है कि गोबरको जला डालनेसे हमारे खेतोंका कस — फसल पैदा करनेकी ताकत — कम हो गया है। बिना खादका खेत बिना घीके लड्डू जैसा सूखा है, अैसा समझना चाहिये। मै यह मान लेता हू कि गोबरको जलाकर रसायनी खाद खरीदनेवाले मूर्ख किसान तो भारतमें नही ही होंगे। और किसान अैसा भी मानते है कि गोबरके खादकी तुलनामें रसायनी खादकी कीमत बहुत कम है। रसायनी खादोंके अुपयोगसे जैसे लाभ होता है वैसे नुकसान भी होता है। रसायनशास्त्रियोंके प्रयोग अिस बारेमें अभी पूरे नही हुअे है। फिर भी अुनमें से बहुतेरे यह मानते

जब मैलेको छिछला गाड़नेकी बात कही तब यह समझ लेना चाहिये कि मैलेके लिये चौरस या लम्ब-चौरस अेक बड़ा गड्ढा होना चाहिये। क्योंकि गाड़े हुअे मैले पर दूसरा मैला तो चढ़ाना नहीं है, और न तुरन्त अुसे खोलना है। अिसलिअे पहले दिन जहां मैला गाड़ा गया हो अुसके नजदीक ही दूसरा अेक छोटा चौरस गड्ढा तैयार करना चाहिये। अुसमें से निकली गअी मिट्टी अुसके अेक कोने पर अिकट्ठी कर देनी चाहिये। दूसरे दिन आकर मैला अिस गड्ढेमें गाड़ना चाहिये, किनारे पर पड़ी मिट्टी अुस पर ढाक देनी चाहिये और गड्ढेको समतल बना कर चले जाना चाहिये। अिसी ढगसे शाक-भाजीके छिलकों वगैराके कचरेका खाद तैयार करना चाहिये, लेकिन पासकी दूसरी जगहमें। क्योंकि मैले और शाक-भाजी वगैरा हरी वनस्पतिका कचरा अेक साथ नहीं गाड़ा जा सकता। दोनों पर जमीनके भीतरके जन्तु अेकसी क्रिया नहीं करते। अब ग्रामसेवक समझ गया होगा कि जिस जगह वह मैला गाड़ता है वह जगह हमेशा साफ रहेगी, समतल रहेगी और ताजे जुते हुअे खेतके जैसी मालूम होगी।

अब बचता है अुस कचरेका ढेर जिसका खाद नहीं बन सकता। अुस ढेरका कचरा अेक ही गहरे खड्डेमें गाड़ना चाहिये या गांवके आस-पास जो खड्डे भरने हों अुनमें गाड देना चाहिये। अिस कचरेको भी रोज गाडना चाहिये, मिट्टीसे दबाना चाहिये और खड्डे तथा आसपासकी जगहको साफ रखना चाहिये।

अिस प्रकार अेक महीने तक काम करनेसे ज्यादा परिश्रम किये बिना ही गांव घूरे जैसे गन्दे न रह कर साफ-सुथरे और सुन्दर बन जायेंगे। पाठक समझ गये होंगे कि अिसमें पैसा खर्च करनेकी तो कोअी बात नहीं है। अिसमें न तो सरकारकी मददकी जरूरत है और न विज्ञानकी भारी शक्ति और ज्ञानकी जरूरत है। जरूरत केवल प्रेमल स्वभाववाले ग्रामसेवककी है।

यह कहना आवश्यक नहीं है कि जो बात पेशावको लागू होती है वही ढोरोंके गोबर है। लेकिन अिसका विचार हम अगले

३. अुपले या खाद?

पिछले प्रकरणमें हमने मनुष्यके मैले-पेशाबका विचार कर लिया। गाय-भैंस वगैरा जानवरोंके मूतका हम कोअी अुपयोग नहीं करते, अिसलिये वह गंदगी बढ़ानेका ही काम करता है। गोबरका अुपयोग ज्यादातर अुपले बनानेमें किया जाता है। गोबरका यह बुरा अुपयोग भले न हो, फिर भी यह अुसका कमसे कम अुपयोग है, अिस बारेमें शंका करनेका बिलकुल कारण नहीं है। यह छोटेसे लाभके लिअे बहुत बड़ा नुकसान अुठानेका धन्धा है। अुपलेका अंगार ठंडा या धीमी आंचवाला माना जाता है। हुक्का और चिलम पीनेवाले अिसका अुपयोग करते हैं। पंजाबके लोगोंका अैसा विश्वास है कि अुपलोंकी आग पर घी अच्छा तैयार होता है। अिसमें थोड़ी सचाअी हो भी सकती है। लेकिन ये सारी दलीलें सिर्फ अिसलिये दी जाती हैं कि गोबरका अुपयोग हम अुपले बनानेमें करते हैं। यदि गोबरका हम पूरा पूरा अुपयोग करते हों तो धीमी आग करनेके कअी साधन खोजे जा सकते हैं। अगर अेक अुपलेकी कीमत अेक पाअी होती हो, तो गोबरका पूरा अुपयोग करनेसे अेक अुपलेमें काम आनेवाले गोबरकी कीमत कमसे कम दस गुनी बढ़ जाती है। और यदि हम आंखोंसे दिखाअी न देनेवाले नुकसानका हिसाब भी लगायें, तो अुस नुकसानकी कीमत आंकना कठिन है।

गोबरका पूरा अुपयोग अुसका खाद बनानेमें ही है। खादशास्त्रके जानकारोंका मत है कि गोबरको जला डालनेसे हमारे खेतोंका कस — फसल पैदा करनेकी ताकत — कम हो गया है। बिना खादका खेत बिना घीके लड्डू जैसा सूखा है, अैसा समझना चाहिये। मैं यह मान लेता हूं कि गोबरको जलाकर रसायनी खाद खरीदनेवाले मूर्ख किसान तो भारतमें नहीं ही होंगे। और किसान अैसा भी मानते हैं कि गोबरके खादकी तुलनामें रसायनी खादकी कीमत बहुत कम है। रसायनी खादोंके अुपयोगसे जैसे लाभ होता है वैसे नुकसान भी होता है। रसायनशास्त्रियोंके अिस बारेमें अभी पूरे नहीं हुअे हैं। फिर भी अुनमें से बहुतेरे यह

है कि रसायनी खादके अुपयोगसे बहुत बार फसलकी मात्रा बढ़ायी जाती है, बहुत बार पैदावारकी मात्रा भी बढ़ायी जाती है, परन्तु फसलके गुणको तो नुकसान ही होता है। कुछ विशेषज्ञोंका यह मानना है कि रसायनी खाद डालनेसे जिस खादके किसी खेतमें गेहूं तो अधिक पकेंगे, दाने भी सुन्दर और बड़े अुगेंगे, परन्तु कुदरती खादवाले खेतमें जो गेहूं पकेंगे वे मात्रामें भले कम हों, लेकिन स्वाद और पोषक गुणोंमें पहले गेहूंसे बहुत आगे बढ़ जायेंगे। और, हो सकता है कि पूरी खोज हो जानेके बाद रसायनी खादकी आज जो कीमत आंकी जाती है वह बहुत ज्यादा घट जाय।

अैसा हो या न हो, लेकिन अिस विषयमें मैंने दो मत नहीं सुने कि गोबरका अुपयोग खादके ही लिअे करना चाहिये। अिसलिअे गांववालोंको ढोरोंके गोबर और मूतका अुपयोग खादके लिअे करनेका पूरा ज्ञान देना भी ग्रामसेवकका ही काम हो सकता है। ग्रामसेवकोंका यह कर्तव्य है कि वे अुपलोंके बारेमें लोगोंके गलत खयालको दूर करें, अुपलोंके बदलेमें अुन्हीके जैसा दूसरा अीधन खोज निकाले, खादके रूपमें गोबर और मूतकी कीमत गाववालोंको अनेक तरहसे समझायें और यह समझानेके लिअे जरूरी ज्ञान प्राप्त करे। यह समूचा विषय जितना आनन्द देनेवाला है अुतना ही लाभ पहुचानेवाला भी है; और जो कडा परिश्रम करके अिस विषयमें शोध करना चाहता है, अुसके लिअे तो अिसमें ज्ञानका भंडार ही भरा है। पाठक देखेंगे कि जिस प्रकार मनुष्यके मैले और पेशाबका खाद बनानेमें पैसेकी या भारी विद्वत्ताकी जरूरत नहीं होती अुसी प्रकार ढोरोंके गोबर-मूतका खाद बनानेमें भी नहीं होती। अिसके लिअे केवल अुस प्रेमकी जरूरत है जिसके बारेमें मैंने पिछले प्रकरणमें

४. गांवके रोग

जब हम गांवके लोगोंको शिक्षा देनेका विचार करते हैं तब अक्षर-ज्ञानको — पढ़ने-लिखनेके ज्ञानको — असमें बहुत ही गौण, बहुत छोटा, स्थान मिलता है। जीवनके प्रधान अंगोंके लिअे अक्षर-ज्ञानकी कोअी जरूरत ही नहीं है, अैसा कहा जा सकता है। मोक्ष हमारे जीवनकी अंतिम स्थिति — आखिरी ध्येय — है। असमें कौन अिनकार करेगा कि अिस लोक और परलोकसे सम्बन्ध रखनेवाले मोक्षके लिअे अक्षर-ज्ञानकी जरूरत नहीं है? अगर स्वराज्य हासिल करनेके लिअे देशके करोड़ों लोगोंको अक्षर-ज्ञान देने तक हमें ठहरना पड़े, तब तो स्वराज्य हासिल करना हमारे लिअे लगभग असंभव ही हो जायगा। और, दुनियाके जरतुश्त, औसा वगैरा महान धर्मगुरुओंको अक्षर-ज्ञान था, अैसा किसीने कहा नहीं है।

अिस लेखमालाकी योजनामें अक्षर-ज्ञानको आखिरी स्थान दिया गया है। वह साधन है — जीवनका लक्ष्य साधनेमें मदद पहुंचानेवाला है, साध्य नहीं है — स्वयं ही जीवनका लक्ष्य नहीं है। साधनके नाते जीवनमें वह बड़े कामकी चीज है, अिसे दुनियामें सब कोअी जानते हैं। लेकिन काम-धन्धेमें लगे हुअे और बड़ी अुमरके किसानोंके लिअे कौनसा ज्ञान जरूरी है, अिसका विचार करने पर हम देखते हैं कि अनेक बातें अैसी हैं जिनका ज्ञान अुन्हें अक्षर-ज्ञानसे पहले तुरत मिल जाना चाहिये। मि० ब्रेनकी पुस्तकमें से कुछ हिस्सेका सार मैंने दिया है, अुसमें भी यही बात कही गअी है।*

अिस दृष्टिसे हमने गांवोंकी स्वच्छता, सफाअीका विचार कर लिया। पिछले प्रकरणोंमें जो सुधार बताये गये हैं अुनका ज्ञान किसान बड़ी जल्दी पा सकते हैं। अुस ज्ञानको पानेमें जो चीज रुकावट डालती है वह है सच्चे शिक्षकोंकी कमी और किसानोंका आलसीपन।

---

* मि० ब्रेनकी अिस पुस्तकका नाम है 'दि रीमेकिंग ऑफ विलेज अिण्डिया' (ग्रामीण भारतका पुनर्निर्माण)। अिसका सार गांधीजीने 'यंग अिंडिया' में दिया था। पुस्तकमें भारतके गांवोंकी हालत सुधारनेके अुपाय बताये गये हैं।

आज हमें गांवोंमें आम तौर पर होनेवाले रोगोंका विचार करना है। गांवोंमें रहनेवाले सभी साथियोंको यह अनुभव हुआ है कि वहांके सामान्य रोग बुखार, कब्जियत और फोड़े-फुन्सी हैं। दूसरे भी अनेक रोग गांवोंमें होते हैं, पर अिस समय अुनका विचार करनेकी जरूरत नहीं है। जिन रोगोंके शिकार होने पर किसानोंके कामकाजमें बाधा पड़ती है, वे तो अूपर बताये तीन रोग ही हैं। यह बहुत जरूरी है कि वे लोग अिन रोगोंके घरेलू अिलाज जान लें। अिन रोगों पर ध्यान न देनेसे हम करोड़ों रुपयेका नुकसान अुठाते हैं। अिन रोगोंको बड़ी आसानीसे मिटाया जा सकता है। स्व० डाक्टर देवकी देखरेखमें जो काम बिहारके चम्पारन जिलेमें शुरू हुआ था, अुस काममें अिन रोगोंका अिलाज भी शामिल था। वहां काम करनेवाले स्वयंसेवकोंके पास सिर्फ तीन दवायें रहती थीं। अुसके बादका हमारा अनुभव भी यही बताता है। लेकिन अिस लेखमालामें यह बतानेकी बात नहीं सोची गअी है कि अिन रोगोंका अिलाज कैसे किया जाय।

यह सारा अेक स्वतंत्र और दिलचस्प विषय है। यहां तो अितना ही बताना है कि अिन तीन रोगोंका शास्त्रीय — सच्चे और शुद्ध तरीकेसे किया जानेवाला — अिलाज किसानोंको सिखाना चाहिये। और यह अुन्हें आसानीसे सिखाया जा सकता है। अगर गांवमें सफाअी और स्वच्छता रखी जाय, तो लोगोंको आज जो रोग होते हैं अुनमें से बहुतसे रोग न हों। और, सारे डाक्टर, वैद्य व हकीम जानते हैं कि रोगोंका सबसे अच्छा अिलाज रोगोंको रोकना है। बदहजमी या अपचको रोकनेसे कब्ज नहीं होता; गांवकी हवाको साफ-स्वच्छ रखनेसे बुखार नहीं आता; और गांवका पानी स्वच्छ रखनेसे और रोज साफ पानीसे नहानेसे फोड़े-फुन्सी नहीं होते। तीनों रोगोंका सबसे अच्छा अिलाज अुपवास है। अुपवासके समयमें कटिस्नान और सूर्यस्नान (या धूपस्नान) करना चाहिये। अिस सम्बन्धमें विस्तारसे सारी बातें 'आरोग्यके विषयमें सामान्य ज्ञान'* नामक पुस्तकमें दी गअी हैं। हरअेक स्वयंसेवकको मेरी सलाह है कि यह पुस्तक पढ़ लें।

---

* मूल गुजराती पुस्तकका नाम था 'आरोग्य विषे सामान्य ज्ञान'। अिस पुस्तकके लेख १९०६ के आसपास लिखे गये थे, जो 'अिन्डियन ओपीनियन' में क्रमशः छपे थे। गांधीजी १९४२ में जब आगाखां महलमें नजर-

५. कुअें और तालाब

पुराने जमानेकी तरह आज भी गाव बसानेकी अिच्छा रखनेवाले पहली चिन्ता पानीकी करेंगे। और जहां पानीका अच्छा सुभीता न हो या पैदा न किया जा सके, वहा गाव बसानेका कोअी विचार तक नहीं करेंगे। दक्षिण भारतमें अैसे प्रदेश देखनेमें आते हैं जो और बातोंमें तो सुन्दर हैं, लेकिन पानीकी दृष्टिसे सूखे हैं। वहां पानी न होनेसे गाव नहीं बसाये जा सकते। हवा मनुष्यकी पहली जरूरत है। अिसलिअे अुसे कहीं खोजने नहीं जाना पड़ता। दूसरी जरूरत पानी है। हवा जितनी आसानीसे मिलती है अुतनी आसानीसे तो पानी नहीं मिल सकता, फिर भी अनाज पैदा करने जितना पानी पैदा करनेमें कठिनाअी नहीं पड़ती। लेकिन जिस प्रकार हवा या अनाज साफ-स्वच्छ होना चाहिये, अुसी तरह पानी भी साफ-स्वच्छ होना चाहिये।

हम सब जानते हैं कि यह बात या तो गावके लोग जानते नहीं हैं, या जानते हुअे भी अुसकी ओर ध्यान नहीं देते। अिसलिअे ग्रामसेवक गाववालोंको जो शिक्षा देगा अुसके कार्यक्रममें पानीसे सम्बन्ध रखनेवाली शिक्षाका भी बडे महत्त्वका स्थान रहेगा। और यह शिक्षा देनेमें ग्रामसेवकके धीरजकी कडी परीक्षा हो जायगी। ग्रामवासी खुद मेहनत करके पानी साफ रखनेके अुपाय खोजेंगे या अुन पर अमल करेंगे, अैसी आशा ही नहीं रखी जा सकती। धीरे धीरे गावके लोगोंको पानी साफ रखनेके लाभ और नियम बताने होंगे और अिस काममें अुनकी मदद लेनी होगी। कअी गावोंमें तो अैसा होता है कि अुनके फायदेका काम होने पर भी गाववाले मदद करनेको तैयार नहीं होते। वैसी हालतमें सेवकको अकेले ही मेहनत करके, अपने ही हाथोंसे भरसक काम करके, ग्रामवासियोंको शरमाना होगा।

अब अिस बातकी थोडी जाच करें कि अिस बारेमें क्या करना चाहिये। बहुतेरे गावोंमें अेक ही तालाब होता है। अुसमें ढोर पानी पीते हैं, लोग नहाते-धोते हैं, बरतन माजते और साफ करते हैं, कपड़े धोते हैं और वही पानी पीनेके काममें भी लेते हैं। आरोग्यका शास्त्र जाननेवालोंने अनेक प्रयोग करके यह साबित कर दिखाया है कि अैसे पानीमें जहरीले

कीड़े पैदा हो जाते हैं और यह पानी पीनेसे हैजा, मोतीझिरा वगैरा रोग कुदरती तौर पर पैदा होते हैं। थोडी सावधानी रखनेसे अैसे तालाब साफ़ रह सकते हैं। गावके तालाबके चारों ओर पाल बाध देना चाहिये, जिससे ढोर अुसके भीतर न जा सकें। लेकिन अुनके लिअे पानी पीनेकी सुविधा तो होनी ही चाहिये। अिसके लिअे जैसे बहुतसे कुओंके पास हौज बना दिया जाता है, वैसे ही तालावके पास भी हौज बनवा देना चाहिये। अुस हौजमें अगर गावका हर आदमी अेक अेक घडा पानी डाल दे, तो चाहिये अुतना पानी रोज भरा जा सकता है।

जिस तालाबका पानी लोग पीते हों अुसमें बरतन या कपड़े कभी धोये ही नहीं जा सकते। अिसके दो अुपाय हैं (१) सब लोग अपने घरके लिअे पानी भर कर ले जाते हैं, अिसलिअे बरतन और कपड़े घरमें ही धो लिये जाय, अथवा (२) तालावके पास ही अेक टाकी रखी जाय। अुसमें भी सब लोग अपने अपने हिस्सेका पानी भरें और अुस पानीका अुपयोग गाववाले बरतन और कपड़े धोनेमें करें। गावके लोगोंमें मिल-जुलकर काम करनेकी और दूसरोंका भला करनेकी अैसी भावना हो तो ही यह काम हो सकता है। अिस तरह अगर लोग खुद हाथसे पानी न भरें तो थोड़े खर्चसे टाकी और हौज भरवाये जा सकते हैं। कपड़े धोनेकी जगह पानी तो गिरेगा ही। अिसलिअे अुतना हिस्सा पक्का बधवा लेना चाहिये, ताकि वहां कीचड़ न होने पाये। पीनेका पानी भरनेके बरतन बाहर साफ़ करके ही तालाबमें डुबोये जाने चाहिये। तालावके किनारे अैसी सुविधा होनी चाहिये जिससे पानी भरनेवालोंके पाव पानीमें न पड़ें। यह अुस *गावकी बात हुअी जिसमें अेक ही तालाब होता है।*

कुछ गावोंमें अेकसे ज्यादा तालाब होते हैं या अेकसे ज्यादा तालाब बनानेकी व्यवस्था होती है। अैसे गावोंमें पीनेके पानीका तालाब अलग ही रहना चाहिये।

करके गावके लोगोंमे कराना होगा। यह शिक्षा सस्ती है, सच्ची है और जरूरी है।

६. गांवोंके रास्ते

गावोंके घूरे कैसे मिटाये जा सकते है और अुनसे आरोग्यको होनेवाले नुकसानको रोककर सोने जैसा कीमती खाद कैसे पैदा किया जा सकता है; गोबरको अुपले पाथनेके काममें लेनेके बजाय अुसका खाद बनाकर गावोंकी अुपज आसानीसे कैसे बढाओी जा सकती है; तथा तालाब और कुओंको साफ करके और साफ-सुथरे रखकर आरोग्यकी रक्षा कैसे की जा सकती है — अिन सब बातोंका विचार हमने कर लिया।

अब गावके रास्तोंकी ओर नजर डालें। गावके रास्तोंको देखें तो वे टेँढे-मेढे दिखाओी देते है और अुन पर धूल अिस तरह जमी रहती है, मानो धूलके ढेरोंको फैलाकर सपाट बना दिया गया हो। अुन रास्तों पर चलनेमें मनुष्योंको और गाडी खीचनेवाले बैलोंको बडी तकलीफ होती है टेढे-मेढे और धूलभरे रास्ते होनेसे हमारी गाडिया भी अितनी वजनदार औ भारी पहियोंवाली बनाओी जाती है कि बैलोंको बेकार ही दुगुना बोझ ढो पडता है। अेक ओर धूलकी थर जमे रास्ते तय करनेका कष्ट होना है अ दूसरी ओर भारी गाड़ियोंका वजन खीचनेका खर्च पडता है। अगर ये रास्ते पक्के हों तो बैल दुगुना बोझ खीच सकें, गाडिया सस्ती बनने ल और ग्रामवासियोंका आरोग्य भी सुधरे। आज तो अितना नुकसान अुठाकर मूर्ख कहलानेका धधा चलता है। चौमासेमें अिन रास्तों पर अितना ज्यादा कीचड हो जाता है कि अुसमें से गाडी चलाना कठिन हो जाता है; पानी भी अुनमें अितना भर जाता है कि या तो लोगोंको तैरना पडता है या कमर तक भीगकर जाना पडता है। और अिसकी वजहसे जो कभी तरहके रोग फैलते है, वे नफेमें मिले माने जायगे!

जहा गाव घूरे जैसा हो, जहा तालाब और कुअेंकी कोओी परवाह न करता हो, जहा रास्ते दादा आदमके जमानेमें थे वैसे ही आज भी

हो, वहाके बालकोकी हालत अिससे अलग कैसे हो सकती है? बालकोंके बरताव और अुनकी सभ्यता पर गावकी हालतकी छाया जरूर दिखाओी देगी। बच्चोकी हालतको देखे तो अुनकी परवाह — सारसभाल — भी वैसी ही की जाती है, जैसी गावके रास्तोंकी की जाती है। अिसकी चर्चामें जिस समय हम अुतरेंगे तो यह अपनी बातको छोडकर दूसरी बातकी चर्चामें पडने जैसा हो जायगा।

तब अिन रास्तोंकी हालत कैसे सुधारी जाय? गावके लोगोंमे आपसमें मिल-जुलकर काम करनेकी भावना हो तो बिना किसी खर्चके या ककड, मिट्टी वगैराके थोडे ही खर्चसे वे लोग पक्के रास्ते बनाकर अपने गावकी कीमत बढा सकते है, और अिस तरह मिल-जुलकर काम करनेकी वजहसे बडे-छोटे सब लोगोंको सच्ची शिक्षा मुफ्त मिलेगी। जहा तक बने गावके लोग मजदूरोंसे कोओी काम न करवायें। गावके सब लोग किसान होते हैं, अिसलिअे सब स्वतत्र ढगसे अपने अपने मजदूर ही होते हैं। जरूरत पडने पर वे अपने पडोसी मजदूरकी मदद ले लेते है। ग्रामनिवासी रोज थोडा थोडा समय रास्तोंके लिअे दें तो कुछ ही समयमें वे रास्तोको सुधार सकते है। अैसा करनेके लिअे वे गावकी गलियोंका और आसपासके गावोंमें जानेके रास्तोका नकशा तैयार करके अपनी शक्तिके मुताबिक कार्यक्रम बना सकते हैं और पुरुष, स्त्रिया और बच्चे सब अुसमें कम-ज्यादा हिस्सा ले सकते है। आज हमारे सोचने-विचारनेका दायरा अपने परिवारके जीवन तक ही सीमित रहता है। परिवारकी सीमासे आगे बढकर हम विचार नही कर पाते। ग्राम-सुधारका काम तभी हो सकता है जब हम परिवारकी हद तक बधी रहनेवाली अपनी अिस भावनाको फैलाकर सारे गाव तक पहुचा दें। गावकी हालतको देखकर हमारी सभ्यताका अन्दाज लगाया जाता है। हर परिवारका हर आदमी जिस तरह परिवारका मकान साफ-सुथरा रखता है, अुसी तरह हर परिवारको अपना गाव साफ-सुथरा रखनेके लिअे तैयार होना चाहिये। अैसा हो तो ही गावके लोग सुखसे रह सकते है और अपने पावों पर खडे हो सकते है।

आज तो हर बातमें सरकारकी ओर हमारी नजर लगी रहती है। सरकार हमारे घूरे साफ करे, सरकार हमारे रास्ते बनाये और अुनकी

करके गावके लोगोंसे कराना होगा। यह शिक्षा सस्ती है, सच्ची है और जरूरी है।

६. गांवोंके रास्ते

गावोंके घूरे कैसे मिटाये जा सकते हैं और अुनसे आरोग्यको होनेवाले नुकसानको रोककर सोने जैसा कीमती खाद कैसे पैदा किया जा सकता है, गोबरको अुपले पाथनेके काममें लेनेके बजाय अुसका खाद बनाकर गावोंकी अुपज आसानीसे कैसे बढ़ाअी जा सकती है, तथा तालाब और कुओंको साफ करके और साफ-सुथरे रखकर आरोग्यकी रक्षा कैसे की जा सकती है — अिन सब बातोंका विचार हमने कर लिया।

अब गावके रास्तोंकी ओर नजर डालें। गावके रास्तोंको देखें तो वे टेढ़े-मेढ़े दिखाअी देते हैं और अुन पर धूल अिस तरह जमी रहती है, मानो धूलके ढेरोंको फैलाकर सपाट बना दिया गया हो। अुन रास्तों पर चलनेमें मनुष्योंको और गाडी खींचनेवाले बैलोंको बडी तकलीफ होती है। टेढ़े-मेढ़े और धूलभरे रास्ते होनेसे हमारी गाड़ियां भी अितनी वजनदार और भारी पहियोंवाली बनाओ जाती हैं कि बैलोंको बेकार ही दुगुना बोझ ढोना पडता है। अेक ओर धूलकी थर जमे रास्ते तय करनेका कष्ट होता है और दूसरी ओर भारी गाडियोंका वजन खींचनेका खर्च पडता है। अगर ये ही रास्ते पक्के हों तो बैल दुगुना बोझ खींच सकें, गाड़ियां सस्ती बनने लगें और ग्रामवासियोंका आरोग्य भी सुधरे। आज तो अितना नुकसान अुठाकर मूर्ख कहलानेका धंधा चलता है। चौमासेमें अिन रास्तों पर अितना ज्यादा कीचड हो जाता है कि अुनमें से गाडी चलाना कठिन हो जाता है; पानी भी अुनमें अितना भर जाता है कि या तो लोगोंको तैरना पड़ता है या कमर तक भीगकर जाना पडता है। और अिसकी वजहसे जो कभी तरहके रोग फैलते हैं, वे नफेमें मिले माने जायगे!

जहां गांव घूरे जैसा हो, जहां तालाब और कुअेंकी कोअी परवाह न करता हो, जहां रास्ते दादा आदमके जमानेमें थे वैसे ही आज भी

हो, वहांके बालकोंकी हालत अिससे अलग कैसे हो सकती है ? बालकोंके बरताव और अुनकी सभ्यता पर गांवकी हालतकी छाया जरूर दिखाअी देगी। बच्चोंकी हालतकी देखें तो अुनकी परवाह — सारसंभाल — भी वैसी ही की जाती है, जैसी गांवके रास्तोंकी की जाती है। अिसकी चर्चामें जिस समय हम अुतरेंगे तो वह अपनी बातको छोड़कर दूसरी बातकी चर्चामें पड़ने जैसा हो जायगा।

तब अिन रास्तोंकी हालत कैसे सुधारी जाय ? गांवके लोगोंमें आपसमें मिल-जुलकर काम करनेकी भावना हो तो बिना किसी खर्चके या कंकड़, मिट्टी वगैराके थोड़े ही खर्चसे वे लोग पक्के रास्ते बनाकर अपने गांवकी कीमत बढ़ा सकते हैं, और अिस तरह मिल-जुलकर काम करनेकी वजहसे बड़े-छोटे सब लोगोंको सच्ची शिक्षा मुफ्त मिलेगी। जहां तक बने गांवके लोग मजदूरोंसे कोअी काम न करवायें। गांवके सब लोग किसान होते हैं, अिसलिअे सब स्वतंत्र ढंगसे अपने अपने मजदूर ही होते हैं। जरूरत पड़ने पर वे अपने पड़ोसी मजदूरकी मदद ले लेते हैं। ग्रामनिवासी रोज थोड़ा थोड़ा समय रास्तोंके लिअे दें तो कुछ ही समयमें वे रास्तोंको सुधार सकते हैं। अैसा करनेके लिअे वे गांवकी गलियोंका और आसपासके गांवोंमें जानेके रास्तोंका नकशा तैयार करके अपनी शक्तिके मुताबिक कार्यक्रम बना सकते हैं और पुरुष, स्त्रियां और बच्चे सब अुसमें कम-ज्यादा हिस्सा ले सकते हैं। आज हमारे सोचने-विचारनेका दायरा अपने परिवारके जीवन तक ही सीमित रहता है। परिवारकी सीमासे आगे बढ़कर हम विचार नहीं कर पाते। ग्राम-सुधारका काम तभी हो सकता है जब हम परिवारकी हद तक बंधी रहनेवाली अपनी अिस भावनाको फैलाकर सारे गांव तक पहुंचा दें। गांवकी हालतको देखकर हमारी सभ्यताका अन्दाज लगाया जाता है। हर परिवारका हर आदमी जिस तरह परिवारका मकान साफ-सुथरा रखता है, अुसी तरह हर परिवारको अपना गांव साफ-सुथरा रखनेके लिअे तैयार होना चाहिये। अैसा हो तो ही गांवके लोग सुखसे रह सकते हैं और अपने पांवों पर खड़े हो सकते हैं।

आज तो हर बातमें सरकारकी ओर हमारी नजर लगी रहती है। सरकार हमारे घूरे साफ करे, सरकार हमारे रास्ते बनाये और अुनकी

मरम्मत करे, सरकार हमारे कुअें-तालाब साफ रखे, सरकार हमारे बच्चोंको शिक्षा दे, सरकार हमें मेर-चीतोंसे बचाये और सरकार ही हमारी जमीन-जायदाद और धन-दौलतकी रक्षा करे! अिस वृत्तिको अपनेमें बढ़ाकर हम अपंग बन गये हैं। दिनोंदिन यह हालत बढ़ती जा रही है और हम पर सरकारी करका बोझ भी बढ़ता जा रहा है। यदि गावके सब लोग गावकी सफाओ, शोभा और रक्षाके लिअे अपनेको जिम्मेदार मानें, तो बहुतसे सुधार तुरन्त और लगभग बिना पैसेके हो जायें। अितना ही नहीं, बल्कि आने-जानेकी सुविधायें बढ़नेसे और लोगोंके आरोग्यमें सुधार होनेसे गावकी हालत पैसे-टकेसे भी बहुत अच्छी हो जाय।

रास्तोंको साफ करनेमें थोडी बुद्धि लगानेकी जरूरत होती है। नकशा तैयार करनेकी बात तो मैं अूपर कह ही चुका हूं। सब गावोंमें रास्तोंको अच्छे और पक्के बनानेकी अेक ही तरहकी सुविधायें नहीं होतीं। कुछ गावोंमें पत्थर मिलते हैं, कुछ गावोंमें नहीं मिलते। बिहारके कुछ भागोंमें पत्थर ढूढने पर भी नहीं मिलते। रास्ते पक्के बनानेके लिअे क्या अुपाय किये जाने चाहिये, यह खोजनेका काम अुस ग्रामसेवकका है, जिसकी कल्पना अिस लेखमालामें की गअी है। ग्रामसेवक अपने आसपासके स्थानोंमें घूमे और अिस बारेमें सरकारी पद्धतिसे कुछ सीखनेको मिले तो सीख ले। सरकार रास्तोंको पक्का बनानेके लिअे जो अुपाय काममें लेती है, अुनमें से लेने जैसे अुपाय अपनाये जा सकते हैं। कभी कभी गावके बूढ़े लोगोंके पास अैसी बातोंका व्यावहारिक ज्ञान बहुत होता है। अिस ज्ञानकी खोज करनेमें और अिसका अुपयोग करनेमें ग्रामसेवकको कभी शरमाना नहीं चाहिये। और, दूसरे कामोंकी तरह अिस काममें भी ग्रामसेवकको अपनी हाथ-मेहनतका अुदाहरण गाववालोंके सामने रखकर रास्तोंको पक्का बनाना शुरू कर देना चाहिये।

७. जगतका पिता

१

'रे खेडूत तु खरे जगतनो तात गणायो'[1]

यह कविता हम प्राथमिक शालामें शिक्षा लेते हुअे सीखते हैं। असका क्या अर्थ है और जगतके पिता किसानके लिअे हमारे मनमें कितनी कम भक्ति है, असका थोडा स्मरण हमें श्री चन्दुलालके लेख[2] से होता है।

श्री चन्दुलालने किसानोंकी हालतके बारेमें बहुत थोडेमें लिखा है, लेकिन वह बहुत असर करनेवाला है। अुन्होंने काठियावाड (सौराष्ट्र) के किसानोंको ध्यानमें रखकर अपनी बात लिखी है। लेकिन जो बात काठियावाडके किसानोंके लिअे सच है, वह अलग अलग प्रकारसे सारे हिन्दुस्तानके किसानोंके बारेमें भी सच है। जब तक किसानोंकी हालत पर शिक्षित लोग विचार नहीं करते, जब तक अुनकी हालतको वे जानते और अनुभव नहीं करते, तब तक किसानोंकी आजकी हालतमें सुधार नहीं हो सकता।

किसानोंकी हालतके बारेमें हमारे नेताओंने थोडी जानकारी हासिल की है, कुछ लिखा भी है, धारासभाओंमें भी अुसकी चर्चा की है। फिर भी नेताओंको अुस हालतका कोअी अनुभव न होनेके कारण अुसमें सच्चा सुधार नहीं हो सका।

बेशक, सरकारी अधिकारी किसानोंकी हालतको जानते हैं, लेकिन अुनकी स्थिति सचमुच दयाजनक है। अुन्होंने अधिकारियोंकी नजरसे, यानी जमीनका महसूल वसूल करनेवालोंकी नजरसे, किसानोंको देखा है। जो अधिकारी ज्यादासे ज्यादा जमीन-महसूल लगा सके और वसूल कर सके, अुस अधिकारीकी तरक्की होती है, अुसको पदवियां — खिताब — मिलती हैं और वह होशियार माना जाता है। हम जिस नजरसे

---

१. हे किसान, तू सच्चे अर्थमें जगतका पिता माना गया है।

२. श्री चन्दुलाल पटेलका यह लेख 'काठियावाडी खेडूतो' नामसे ता० २८-९-'१९ के 'नवजीवन' में छपा था।

किसी चीजकी जाच करते है, अुसी नजरसे हम अुसे देख सकते हैं। अिसलिअे जब तक हम किसानोकी नजरसे किसानोकी हालतकी जाच नही करेंगे, तब तक अुनकी हालतका सच्चा, हूबहू चित्र हमारे सामने नही आयेगा।

फिर भी कुछ हद तक हम किसानोकी हालतको जान सकते हैं। हिन्दुस्तान गरीब है, कगाल है। अुसके लाखो आदमियोको अेक ही जून खानेको मिलता है। अिस सबका अर्थ अितना ही होता है कि हिन्दुस्तानके किसान कगाल हैं और अुनमें से बहुत लोगोको अेक ही जून खानेको मिलता है। ये किसान कौन हैं? हजारों बीघा जमीनके मालिक भी किसान हैं; जिनके पास सिर्फ अेक बीघा जमीन है वे भी किसान हैं; और जिनके पास अेक बीघा जमीन भी नही है, लेकिन जो दूसरोंके अधीन रहकर खेती करते हैं और अनाजका थोडा हिस्सा पाते हैं वे भी किसान हैं। अन्तमें चम्पारनमें मैंने अैसे भी हजारों किसान देखे हैं, जो गोरे साहबोंकी और हमारे देशी लोगोंकी सिर्फ गुलामी ही करते हैं, जिसमें से वे जन्मभर छूट नही सकते। अिन अलग अलग प्रकारके किसानोंकी सच्ची सख्या हमें कभी नही मिल सकेगी। आबादीका गिनती-पत्र बनानेकी भी अेक रीत होती है। किसानोंकी हालत जाचनेके लिअे अगर अैसे गिनती-पत्र बनाये जाय, तो हमें अैसी अैसी बातोंका पता चले जिनसे हमें अचरज हो और शरमसे हमारा सिर झुक जाय। मेरा अनुभव यह है कि किसानोंकी हालत सुधरनेके बजाय दिनोंदिन ज्यादा बिगडती जा रही है। जो खेडा जिला (गुजरातका) आबाद — खुशहाल — माना जाता है, वहा भी जो किसान अच्छे मकान खडे कर सके हैं वे मकानोंकी मरम्मत करानेकी ताकत नही रखते। अुनके चेहरों पर हम जो तेज देखनेकी आशा रख सकते हैं वह तेज नहीं दिखाअी देता। अुनके शरीर जितने मजबूत होने चाहिये अुतने मजबूत नही हैं। अुनके बच्चे बिलकुल बेदम, मरिय[illegible] दिखाअी देते हैं। गावोंमें हैजा और प्लेग जैसी महामारिया घुस गयी हैं; दूसरे छुटपुट रोगोंके भी लोग शिकार हो जाते हैं। बडे बडे पाटीदार — जमीन-मालिक — भी कर्जेके भारी बोझके नीचे दबे हुअे हैं। म[illegible]
गावोंमें जाने पर तो आदमी काप अुठता है। मुझे जितना ग[illegible]

अनुभव खेड़ा और चम्पारन जिलेका है अुतना मद्रासका नहीं है, तो भी यहांके जो गांव मैंने देखे हैं अुनकी हालत परसे मद्रासके किसानोंकी गरीबी और कंगालीका मुझे अच्छी तरह खयाल आ सकता है।

हिन्दुस्तानके सामने यह बड़ेसे बड़ा सवाल है। यह सवाल कैसे हल हो सकता है? किसानोंकी हालत कैसे सुधर सकती है? अिसका विचार हमें हर क्षण करना चाहिये। हिन्दुस्तान अपने शहरोंमें नहीं बसता। हिन्दुस्तान गांवोंमें बसता है। बम्बअी, कलकत्ता, मद्रास वगैरा छोटे-बड़े शहरोंकी बस्तीका जोड़ लगाने जाय तो अेक करोड़से कम ही आयेगा। हिन्दुस्तानमें अच्छे शहरोंकी गिनती करें तो वह १०० के भीतर रहेगी। लेकिन १०० से लेकर १००० मनुष्योंकी बस्तीवाले गांवोंका पार नहीं है। अिसलिअे हम शहरोंको आबाद और खुशहाल बना लें, शहरोंको सुधार लें, तो भी हमारे अुस प्रयत्नका गांवों पर बहुत थोड़ा असर होगा। मैले पानीके डाबरोंको सुधारने, साफ करने पर भी जैसे पासकी नदी पर, अगर अुसमें गंदगी हो तो, कोअी असर नहीं पड़ता, वैसी ही बात शहरोंके सुधारकी है। परन्तु जैसे नदीके सुधर जाने पर डाबरे अपने-आप सुधर जाते हैं, अुसी तरह अगर हम गांववालोंके जीवनमें सुधार कर सकें, अुनके जीवनका विकास साध सकें, तो और सब अपने-आप सुधर सकता है।

'नवजीवन' की दृष्टिमें हमेशा किसानोंकी हालत ही रहेगी। अुनकी हालत कैसे सुधारी जा सकती है, अुसे सुधारनेमें छोटे-बड़े सब कैसे हाथ बटा सकते हैं और यदि हमारे बीच अेक छोटीसी भी सेना अैसी तैयार हो जाय जो सत्यको ही पकड़कर अपना कर्तव्य करती रहे, तो कुछ ही समयमें हम अिस दिशामें कैसे आगे बढ़ सकते हैं — अिसका अब हम आगे विचार करेंगे।

८. जगतका पिता

२

पिछले प्रकरणमें किसानोंकी हालतके बारेमें हमने थोड़ा विचार किया। अब हमें यह सोचना है कि अुनकी वह हालत कैसे सुधर सकती है।

मि० लायोनल कर्टिसने, जो लखनअू कांग्रेसके समय सबके सामने आये थे, अेक स्थान पर हिन्दुस्तानके गावोंका हूबहू चित्र खींचा है। वे कहते हैं कि हिन्दुस्तानके गाव घूरे जैसे लगनेवाले टेकरों पर बसे होते हैं। अुनके झोपडे खडहरों जैसे दिखाओी देते हैं। गावके लोगोंमें ताकत नहीं होती। गावोंमें मंदिर जहा-तहा खडे कर दिये जाते हैं। गावोंमें सफाओी नहीं होती। रास्तों पर खूब धूल जमी रहती है। गावोंका साधारण दृश्य अैसा मालूम होता है, मानो गावकी व्यवस्थाके लिअे कोओी जिम्मेदार ही न हो।

यह वर्णन बहुत बढा-चढ़ाकर नहीं किया गया है; और कुछ हद तक अिसे बढ़ाया भी जा सकता है। अच्छी व्यवस्थावाले गावकी रचनामें कोओी नियम जरूर होने चाहिये। गावकी गलिया टेढ़ी-मेढ़ी होनेके बजाय किसी आकारमें होनी चाहिये; और हिन्दुस्तानमें, जहा करोडों लोग नंगे पाव चलते हैं, रास्ते अितने साफ-सुथरे होने चाहिये कि अुन पर चलने या सोनेमें भी किसी तरहकी नफरत न पैदा हो सके। गलिया पक्की होनी चाहिये और पानीके निकासके लिअे अुनमें नालिया होनी चाहिये। मन्दिर और मसजिद साफ-स्वच्छ और जब देखो तब नये मालूम होने चाहिये। और अुनके भीतर जानेवालोंको शाति और पवित्रताका अनुभव होना चाहिये। गावके भीतर और गावके आसपास फलोंके पेड और दूसरे अुपयोगी पेड होने चाहिये। गावकी अेक धर्मशाला, अेक पाठशाला और रोगियोंका अिलाज और सार-सभाल हो सके अैसा अेक छोटासा अस्पताल होना चाहिये। लोगोंकी रोजकी हाजतों — पाखाना-पेशाब — के लिअे अैसी व्यवस्था होनी चाहिये जिससे गावकी हवा, पानी और रास्ते वगैरा गंदे न हों। हरअेक गावके लोगोंमें अपना अनाज और कपडा खासगें ही पैदा करनेकी या खुद बना लेनेकी शक्ति होनी चाहिये; और चोर-डाकू तथा बाघ-चीतोंके डरसे अपनी रक्षा करनेकी शक्ति भी अुनमें होनी

चाहिये। अिनमें से, बहुतसी बातें अेक समय हिन्दुस्तानके गावोंमें थी। जो कुछ नही था अुसकी अुस समय शायद जरूरत नही रही होगी। ये बातें किसी समय गावोंमें रही हो या न रही हो, फिर भी मैंने अूपर बताओ है वैसी व्यवस्था गावकी होनी चाहिये अिस बारेमें कोओ शका नही है। अैसे गाव ही स्वाश्रयी व स्वावलम्बी यानी अपने पावो पर खडे रहनेवाले कहे जायगे। और अगर सभी गाव अैसे हो तो हिन्दुस्तानको दूसरी कुछ ही मुसीबतें तकलीफ पहुचा सकती है।

अैसी दशा गावोंमें पैदा करना असभव तो है ही नही, लेकिन हम सोचते होगे वैसा कठिन भी नही है। कहा जाता है कि हिन्दुस्तानमें साढे सात लाख गाव हैं। अिसलिअे अेक गावकी आबादी लगभग ४०० तक पहुचेगी। बहुतसे गावोकी आबादी १००० से कम ही है। मेरा पक्का विश्वास है कि अितनी थोड़ी आबादीवाले गावोंमें अच्छी व्यवस्था करना बहुत आसान है। अुसके लिअे बडे बडे भाषणोंकी या विधान-सभाओंकी या कानून-कायदोंकी जरूरत नहीं पडती। सिर्फ अेक ही बातकी जरूरत होनी है। वह है हाथकी अगुलियोंके पोरों पर गिने जा सके अितने शुद्ध मनसे काम करनेवाले स्त्री-पुरुषोंकी जरूरत। वे अपने बरतावसे, अपनी सेवाके बल पर, हरअेक गांवमें जरूरी फेर-बदल करा सकते हैं। अुन्हें दिन-रात अिसी काममें लगा रहना पडे अैसा भी नही है। वे अपनी जीविका, अपने गुजारेके लिअे कोअी धन्धा करते हुअे भी सेवाकी भावना रखनेके कारण अपने गावमें कीमती फेर-बदल करा सकते हैं।

अैसे सेवकोंके लिअे अूंची शिक्षाकी जरा भी जरूरत नहीं। अुन्हें नामके लिअे भी अक्षर-ज्ञान न हो तो भी गावके सुधारका काम हो सकता है। अिस काममें सरकार या देशीराज्य दखल नहीं दे सकते और अुनकी मददकी बहुत कम जरूरत रहती है। हर गावमें अिस प्रकारके स्वयंसेवक निकल आयें तो बिना किसी दिखावेके, बड़ी हलचलोंके बिना ही सारे हिन्दुस्तानमें गावोंके सुधारका काम हो सकता है और बहुत थोड़ी कोशिशसे अनसोचा नतीजा पैदा किया जा सकता है। अिसमें पैसेकी भी कोअी जरूरत नहीं है, यह तो पाठक सहज ही समझ सकते हैं। जरूरत केवल सदाचारकी यानी धर्म-भावनाकी है।

स्वावलंबनकी शुरुआत यह आसानसे आसान रास्ता है, यह मैं अपने अनुभवसे जानता हूं। अैसे प्रयत्नमें किसी भी गांवको दूसरे गांवोंकी राह देखनेकी जरूरत नहीं है, और न किसी आदमीको दूसरे आदमीकी राह देखनेकी जरूरत है। जिस गांवमें किसी अेक भी पुरुष या स्त्रीके मनमें लोगोंकी सेवा करनेका दृढ़ विचार अुठे, वह अुसी पल सेवाका काम शुरू कर सकता है। और अिस सेवामें अुसकी समूचे हिन्दुस्तानकी पूरी सेवा समा जाती है। मैं आशा रखता हूं कि गांवोंमें रहनेवाले जिन जिन लोगोंके हाथमें यह लेख आयेगा, वे मेरा बताया हुआ प्रयोग शुरू कर देंगे और थोड़े ही समयमें देशको अपने प्रयोगका नतीजा बता सकेंगे। यह प्रयोग कैसे शुरू किया जाय अिसके बारेमें अपने कुछ अनुभव मैं अगले लेखमें पाठकोंके सामने रखूंगा। लेकिन जो ग्रामसेवक अिस बातके लाभको समझ चुके हैं, वे अेक हफ्ते तक भी राह देखे बिना यह काम शुरू कर देंगे अैसी आशा है।

९. जगतका पिता

२

मैं कह चुका हूं कि गांवकी व्यवस्थाको सुधारनेके प्रयोगके बारेमें मैं अपने कुछ अनुभव बताअूंगा। स्व० बहन निवेदिताने कलकत्तेके अेक मुहल्लेको कैसे सुधारा, अिसका अुदाहरण देकर डा० हरिप्रसादने* यह दिखा दिया है कि अेक अकेला पुरुष या स्त्री भी अिरादा कर ले तो कितना काम कर सकता है। गांवोंमें अैसा काम करना शहरोंके मुहल्लोंको सुधारनेसे ज्यादा आसान है। चम्पारन जिलेमें जब अपने पांवों पर खड़ी रहनेवाली शालायें खोलनेका निश्चय हुआ तब मैंने स्वयंसेवकोंकी मांग की थी। वहां आये हुअे स्वयंसेवकोंमें स्व० डाक्टर देव और बेलगांवके श्री सोमण वकील भी थे। अिन स्वयंसेवकोंको सिर्फ तीन ही काम करने थे: १. जो लड़के-लड़कियां आयें अुन्हें पढ़ाना; २. गांवके लोगोंको आसपासके

* स्व० डाक्टर हरिप्रसाद देसाअी अहमदाबादके अेक प्रसिद्ध सेवाभावी कार्यकर्ता थे। अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटीके वे अुपाध्यक्ष रह चुके थे।

रास्ते, मकान वगैरा साफ-सुथरे रखना सिखाना और अैसा करनेके लिअे अुनसे कहना; और ३ जो बीमार आये अुन्हे दवा देना। श्री सोमणको भीतिहरवा नामके अेक गावमे रखा गया था। डाक्टर देव शालावाले गावोंमे दवाका अिन्तजाम करते थे। अिस बीच अुन्हे भीतिहरवाकी शालामे ज्यादा रहना पड़ा। वहाके लोगों पर सुधारोंकी बातका असर डालना कठिन था। अुन्हे अपने गावमें कौन कौनसे सुधार करने चाहिये, यह डाक्टर देवने अुन्हे बताया था। लेकिन गावके लोग डा० देवकी बातोंकी क्यों परवाह करने लगे? बात गावके रास्ते साफ करनेकी और कुअेंके आसपासकी जमीनको ढालू बनाकर सारा कीचड साफ कर देनेकी थी। अन्तमें डा० देव और श्री सोमणने कुदाली हाथमें ली और कुअेके आसपासकी जमीनको ढालू बनाने तथा रास्ते साफ करनेका काम शुरू कर दिया। छोटासा गाव ठहरा। बात बिजलीकी तरह सारे गावमें फैल गअी। गाववाले डा० देवकी बातका मतलब समझ गये। डा० देवके काममें जो बल था वह अुनकी बातोंमें नही था। गावके लोग भी सफाअी करने निकल पडे। और तबसे भीतिहरवाके कुअें और रास्ते साफ-सुथरे और सुन्दर दिखाअी देने लगे। कचरेके ढेर गायब हो गये। अिस बीच घास-फूसकी जो शाला खडी की गअी थी अुसे तूफानियोंने जला डाला। अब क्या किया जाय, यह अेक बडा सवाल हो गया। क्या दुबारा घास-फूसकी शाला बनाअी जाय और अुसमें जलनेका खतरा अुठाया जाय? श्री सोमण और डा० देवने अीटकी पक्की शाला बनानेका निश्चय किया। अब तक दोनोंको भाषण देनेकी कला आ गअी थी। अुन्होंने जरूरी सामानकी लोगोंसे भीख मागी। जरूरत मालूम हुअी वहा पैसे भी दिये। और दोनोंने मेहनत करना शुरू कर दिया। पक्की शालाकी नीव दोनोंने अपने हाथोंसे डाली, अिसलिअे गावके लोग भी मददमें आ पहुंचे, कारीगर भी भरसक मदद करने लगे। भीतिहरवाकी वह शाला आज भी अिस बातकी गवाही देनेके लिअे खडी है कि अेक-दो आदमी भी चाहें तो कितना काम कर सकते हैं। अिस तरहका काम सिर्फ अेक गावमें नही, बल्कि जिस जिस गावमें शाला बनाअी गअी अुस अुस गावमें कम-ज्यादा मात्रामें हुआ, और शिक्षकोंके काममें गाववालोंको खींचनेकी जितनी शक्ति थी अुतना काम

लोग अुनके साथ करने लग गये। यह सेवा करनेमें बहुत बड़ी होशियारीकी जरूरत नहीं थी; जरूरत थी केवल हमदर्दीकी और लगनसे काम करनेकी। अिनके साथ होशियारी और कारीगरीकी मदद दूसरे लोगोंसे मिल जाती थी।

अेक बार खेड़ा जिलेमें फसलका अन्दाज निकालना था। अिस काममें सारे किसान मदद न करते तो यह पूरा नहीं हो सकता था। अेक अेक गांवमें अेक अेक स्वयंसेवक पहुंच गया और जो कुछ जानकारी हासिल करनी थी वह अुसने हासिल कर ली। अितना ही नहीं, अुन्होंने अपने बरतावसे किसानोंके मन जीत लिये। अैसे अनेक अुदाहरण मैं अलग अलग जगहोंके दे सकता हूं।

अब हम यह देख सकते हैं कि गांवमें सुन्दर व्यवस्था कायम करनेकी अिच्छा रखनेवालेको अपना काम कैसे शुरू करना चाहिये। वह जिस गलीमें रहता होगा अुस गलीको ही अिस कामके लिअे चुनेगा। अुसमें रहनेवाले सब लोगोंको वह पहचान लेगा। थोड़ा भी दिखावा किये बिना अुनके दुःखमें वह भाग लेगा। गलीको साफ-सुथरी रखनेमें अुनकी मदद मांगेगा। पड़ोसी अगर मजाक अुड़ायेंगे, अपमान भी करेंगे, तो यह सब सेवक सहन कर लेगा, और अिसके बावजूद पहलेकी तरह अुन लोगोंके दुःखमें भाग लेगा और अकेला ही अपनी गलीको साफ रखेगा। अुसकी पत्नी, मां, बहन वगैरा धीरे धीरे अुसके अिस काममें हाथ बटायेंगे। पड़ोसके लोग मदद करें या न करें, फिर भी गली तो सदा साफ-सुथरी ही रहेगी। और अनुभवसे पता चलेगा कि अिस काममें अुसे अधिक समय नहीं देना पड़ेगा। अन्तमें पड़ोसी खुद यह काम करने लग जायंगे और अेक गलीकी सुगन्ध सारे गांवमें फैल जायगी।

अगर अैसे सेवकमें अधिक जोश और अुमंग होगी और वह काफी पढ़ा-लिखा होगा, तो अपनी गलीके लड़के-लड़कियोंको और अपढ़ बड़े लोगोंको भी वह अक्षर-ज्ञान देगा। अगर अुसकी गलीमें कोअी बीमार हो और गरीबीके कारण वैद्य-हकीमकी दवा करानेकी ताकत न रखते हों, तो अैसे लोगोंके लिअे वह बिना पैसा लिये दवा देनेवाला वैद्य या हकीम खोज निकालेगा। बीमारोंकी सेवा-चाकरी करनेवाला कोअी न हुआ तो वह

सुद अुनकी सेवा-चाकरी करेगा। यह सब करते करते अुसे अिस बातका काफी अच्छा ज्ञान हो जायगा कि पैसे-टके और सदाचारकी दृष्टिसे अुसके पड़ोसियोंकी स्थिति कैसी है। अितना ज्ञान मिल जानेसे ग्रामसेवक अुस स्थितिमें जरूरी सुधार करनेकी योजना बनायेगा। अैसे सुधार करते करते अुसे अपने पड़ोसियोंकी और अुनके मारफत सारे गांवकी राजनीतिक स्थितिका भी खयाल आ जायगा, और यदि अुस खयालके साथ सेवकमें गांववालोंसे मिल-जुलकर काम करानेकी शक्ति आ जाय, तो वह लोगोंकी राजनीतिक स्थिति भी सुधार सकेगा। दक्षिण अफ्रीका, चम्पारन, खेड़ा वगैरामें मैं यह देख सका कि जिन्हें हम अपढ़ मानते हैं वैसे आदमी अपनी लगन और लोगोंके लिअे अपनी हमदर्दी और प्रेमके कारण सुन्दर सेवा कर सके हैं और जनता पर असर भी डाल सके हैं। जिस जिस गांवमें मैंने अेक भी लगन और जीवटवाले पुरुष या स्त्रीको देखा है, अुस अुस गांवमें मैंने अुसे बहुत सुन्दर काम करते भी देखा है।

अब हम सफाअीसे संबंध रखनेवाले तथा नैतिक, शारीरिक और आर्थिक आरोग्यसे सम्बन्ध रखनेवाले नियमोंकी जांच करेंगे। मैं आशा करता हूं कि जिन्हें वे नियम पसन्द आयेंगे, वे लोग अपने अपने गांवमें अुन नियमोंके अनुसार काम करने लग जायंगे। और यदि अैसा होगा तो हम थोड़े ही समयमें कुछ गांवोंकी हालत पर भारी असर डाल सकेंगे और अुनमें मनचाहा सुधार कर सकेंगे।

१०. जगतका पिता

४

हमने किसानोंकी हालत पर विचार किया। गांवोंमें सफाअीके नियमोंका पालन नहीं किया जाता, यह भी हमने देखा। 'तन्दुरुस्ती और हजार नियामत' अिस कहावतमें बड़ी सचाअी है। बहुत अूंची दशाको पहुंचे हुअे स्त्री-पुरुष रोगकी पीड़ा भोग रहे हों तो भी अपनी स्थितिको संभाल सकते हैं। परन्तु हम लोग, जिन्हें अभी चोटी पर पहुंचना है, अगर रोगके शिकार हो जायं तो चढ़नेमें हांफने ही लग जायंगे।

अंग्रेजीमें अेक कहावत है कि 'ठंडे पैरोंसे कोअी स्वर्गमें नहीं जा सकता।' अिंग्लैण्ड जैसे ठंडे देशमें अगर लोगोंके पैर ठंडे रहें तो अुन्हें घबराहट होती है। अुन हालतमें भगवानका स्मरण भी नहीं सूझता। कहावत है कि 'स्वच्छता दैवी स्थितिके समान है।' गन्दे रहनेका या गन्दे वातावरणमें रहनेका हमारे लिअे कोअी कारण नहीं है। गन्दगीमें पवित्रता नहीं हो सकती। गन्दगी अज्ञानकी, आलसीपनकी निशानी है। अुसमें से किसान बाहर कैसे निकल सकते हैं?

हम सफाअीके, स्वच्छताके, कुछ नियमोंका विचार करें:

(१) हमारे अनेक रोगोंका मूल हमारे पाखानोंमें या दिशा-जंगल जानेकी हमारी आदतमें होता है। हर घरमें पाखाना होना जरूरी है। सिर्फ तन्दुरुस्त और बड़े लोग ही दिशा-जंगलके लिअे गांवसे बाहर जा सकते हैं। दूसरोंके लिअे अगर पाखाना न हो तो वे मुहल्लेको, गलीको या घरको पाखाना बनाकर जमीन गन्दी करते हैं और हवाको जहरीली बनाते हैं। अिस सम्बन्धमें हम दो अुपनियम बना सकते हैं।

(क) अगर दिशा-जंगल जाना हो तो गांवसे अेक मील दूर जाना चाहिये। वहां बस्ती नहीं होनी चाहिये, लोगोंके पैरोंकी आवाज नहीं होनी चाहिये। पाखाना फिरते समय खड्डा खोदना चाहिये और फिर लेनेके बाद मैले पर काफी मिट्टी डालनी चाहिये। जितनी मिट्टी खोदी हो अुतनी वापिस ढांक देनेसे मैला अच्छी तरह दब जाता है। अितनी कमसे कम तकलीफ अुठाकर हम स्वच्छताके अेक बड़े नियमका पालन कर सकते हैं। समझदार किसान अपने खेतमें ही पाखाना फिरेंगे और बिना पैसा खर्च किये खेतमें कीमती खाद भरेंगे।

अिस तरह दिशा-जंगल जाय तो भी हर घरमें अेक पाखाना तो होना ही चाहिये। अुसके लिअे डिब्बा काममें लाना चाहिये। अुसमें भी पाखाना फिर लेनेके बाद हर आदमीको काफी मिट्टी डालनी चाहिये, जिससे दुर्गन्ध न आये, मक्खियां न भिनभिनायें और कीड़े न पैदा हों। पाखानेका डिब्बा हमेशा अच्छी तरह साफ होना ही चाहिये। कुआं-* बेकार होता है। जमीनकी अेक फुट तककी थर जन्तुओंसे

* जितना गहरा खड्डा खोदकर बनाया हुआ पाखाना।

वहां अिलाज करेंगे। यह काम अधिकसे अधिक कठिन है क्योंकि अिसमें रस लेनेवाले थोड़े ही लोग होते हैं। लेकिन किसी न किसी दिन तो यह काम हमें करना ही होगा। अिस धर्मके पालनमें भूलके लिअे काअी गुंजाअिश नहीं है। जितना अधिक अिस धर्मका पालन होगा अुतना ही अधिक फल यह देगा। जो ग्रामसेवक शुरू करना चाहे वह अिसे शुरू करके अेक ही सालमें अपने गांवकी तन्दुरुस्ती सुधार सकेगा।

११. गुजारेका झूठा डर

बहुतेरे कार्यकर्ता गांवके जीवनसे बहुत ज्यादा डरते हैं। अुनके मनमें यह डर बना रहता है कि अगर कोअी संस्था अुन्हें तनखाह न दे — खासकर अुस हालतमें जब वे विवाहित हों और अुन्हें परिवारका पालन-पोषण करना हो — तो वे गांवमें मेहनत-मजदूरी करके अपनी रोटी नहीं कमा सकेंगे। मेरी रायमें कार्यकर्ताओंका अैसा मानना या अैसा डर रखना नीचे गिरानेवाला है। हां, अगर कोअी आदमी शहरी मन लेकर — शहरी जीवनके तौर-तरीके, रीति-रिवाज, आचार-विचार वगैरा लेकर — गांवमें जाय और वहां शहरी रहन-सहनसे चिपटा रहना चाहे, तो वह शहरी लोगोंकी तरह गांवके लोगोंको चूसे बिना पूरी कमाअी कर ही नहीं सकता। लेकिन अगर कोअी आदमी गांवमें जाकर बसे और गांवके लोग जिस ढंगसे रहते हैं अुसी ढंगसे रहनेका प्रयत्न करे, तो पसीना बहाकर रोटी कमानेमें अुसे कोअी कठिनाअी नहीं होनी चाहिये। अुसके मनमें अितना विश्वास होना चाहिये कि अगर गांवके लोग, जो बुद्धिका अुपयोग किये बिना पुराने जमानेसे चले आये तरीकेसे सालभर कड़ी मेहनत करनेको तैयार रहते हैं, अपनी रोटी कमा सकते हैं, तो वह भी कमसे कम गांवके सामान्य आदमीके जितनी कमाअी तो कर ही सकता है। अितनी कमाअी वह अेक भी ग्रामवासीकी रोटी छीने बिना करेगा, क्योंकि वह गांवमें मुफ्तकी रोटी खानेवाला बनकर नहीं बल्कि कुछ न कुछ अुत्पन्न करनेवाला बनकर जायगा।

बड़ा अिलाज करेंगे। यह काम अधिकसे अधिक कठिन है, क्योंकि अिसमें रस लेनेवाले थोड़े ही लोग होते हैं। लेकिन किसी न किसी दिन तो यह काम हमें करना ही होगा। जिस धर्मके पालनमें भूलके लिअे कोअी गुंजाअिश नहीं है। जितना अधिक अिस धर्मका पालन होगा अुतना ही अधिक फल यह देगा। जो ग्रामसेवक शुरू करना चाहे वह अिसे शुरू करके अेक ही सालमें अपने गावकी तन्दुरुस्ती सुधार सकेगा।

११. गुजारेका झूठा डर

बहुतेरे कार्यकर्ता गावके जीवनसे बहुत ज्यादा डरते हैं। अुनके मनमें यह डर बना रहता है कि अगर कोअी संस्था अुन्हें तनखाह न दे — खासकर अुस हालतमें जब वे विवाहित हों और अुन्हें परिवारका पालन-पोषण करना हो — तो वे गावमें मेहनत-मजदूरी करके अपनी रोटी नहीं कमा सकेंगे। मेरी रायमें कार्यकर्ताओंका अैसा मानना या अैसा डर रखना नीचे गिरानेवाला है। हां, अगर कोअी आदमी शहरी मन लेकर — शहरी जीवनके तौर-तरीके, रीति-रिवाज, आचार-विचार वगैरा लेकर — गावमें जाय और वहां शहरी रहन-सहनसे चिपटा रहना चाहे, तो वह शहरी लोगोंकी तरह गावके लोगोंको चूसे बिना पूरी कमाअी कर ही नहीं सकता। लेकिन अगर कोअी आदमी गावमें जाकर बसे और गावके लोग जिस ढंगसे रहते हैं अुसी ढंगसे रहनेका प्रयत्न करे, तो पसीना बहाकर रोटी कमानेमें अुसे कोअी कठिनाअी नहीं होनी चाहिये। अुसके मनमें अितना विश्वास होना चाहिये कि अगर गावके लोग, जो बुद्धिका अुपयोग किये बिना पुराने जमानेसे चले आये तरीकेसे सालभर कड़ी मेहनत करनेको तैयार रहते हैं, अपनी रोटी कमा सकते हैं, तो वह भी कमसे कम गावके मामूली आदमीके जितनी कमाअी तो कर ही सकता है। अितनी कमाअी वह अेक भी ग्रामवासीकी रोटी छीने बिना करेगा, क्योंकि वह गावमें मुफ्तकी रोटी खानेवाला बनकर नहीं बल्कि कुछ न कुछ अुत्पादन करनेवाला बनकर जायगा।

हर गांवमें अेक बड़ी जरूरत अीमानदारीसे चलनेवाली अैसी दुकान-की है, जिसमें मूल कीमत पर अुचित नफा चढ़ाकर खरी-खरी शुद्ध — बिना मिलावटवाली — चीजें और दूसरी चीजें भी मिल सकें। यह सच है कि छोटीसे छोटी दुकानके लिअे भी थोड़ी-बहुत पूंजीकी जरूरत तो होती ही है। लेकिन जो ग्रामसेवक अपने कामके क्षेत्रमें थोड़ा भी मशहूर हो गया होगा, अुसकी अीमानदारी पर लोगोंका अितना विश्वास जरूर जम गया होगा कि अुसे थोड़ा थोड़ा थोक माल दुकानके लिअे अुधार मिल सके।

अिस कामके बारेमें अिससे ज्यादा सूचनायें यहां मैं नहीं दूंगा। आसपासकी स्थितिकी सावधानीसे जांच करनेकी आदतवाला सेवक हमेशा महत्त्वकी खोज करता ही रहेगा और थोड़े ही समयमें जान लेगा कि अपना गुजर चलानेके लिअे वह अैसा कौनसा काम कर सकता है, जो अुसे रोटी दे और साथ ही जिन ग्रामजनोंकी अुसे सेवा करनी है अुनके

ये दो बातें ग्रामसेवामें बहुत आवश्यक मानी जानी चाहिये। अिनके बिना ग्रामसेवा अधूरी रहेगी। अिनमें ग्रामसेवकको रोज दो घंटेसे ज्यादा समय नहीं देना चाहिये। ग्रामसेवकके लिअे आठ घंटेके काम जैसी कोअी चीज नहीं हो सकती। गांवके लोगोंके लिअे वह जो मेहनत करेगा, वह तो प्रेमके खातिर किया हुआ काम होगा। अिसलिअे अपने गुजरके लिअे तो वह अिन दो घंटोंके अलावा कमसे कम आठ घंटे काम करेगा ही। अितना ध्यानमें रखना चाहिये कि चरखा-संघ और ग्रामोद्योग-संघने जो नअी योजना तैयार की है, अुसके अनुसार सब तरहके कामकी अमुक कमसे कम समान कीमत — मजदूरी — गिनी जायगी। जैसे, अेक घंटे पींजन चलाकर अमुक मात्रामें धुनी हुअी रूअी तैयार करनेवाले पिंजारेको अुतनी ही मजदूरी मिलनी चाहिये, जितनी बुनकर, कतैये और कागजीको अुनके अेक घंटेके नियत किये हुअे कामके लिअे मिलेगी। अिसलिअे ग्रामसेवक जो काम आसानीसे कर सके वही काम पसन्द करने और सीखनेकी अुसे छूट है। शर्त अितनी ही है कि वह सदा अैसा काम पसन्द करनेकी सावधानी रखे, जिससे पैदा हुआ माल अुसके गांवमें या आसपासके गांवोंमें बिक सके अथवा जिस मालकी चरखा-संघ और ग्रामोद्योग-संघको जरूरत हो।

हर गांवमें अेक बड़ी जरूरत अीमानदारीसे चलनेवाली अैसी दुकान-की है, जिसमें मूल कीमत पर अुचित नफा चढ़ाकर खुराककी शुद्ध — बिना मिलावटवाली — चीजें और दूसरी चीजें भी मिल सकें। यह सच है कि छोटीसे छोटी दुकानके लिअे भी थोड़ी-बहुत पूंजीकी जरूरत तो होती ही है। लेकिन जो ग्रामसेवक अपने कामके क्षेत्रमें थोड़ा भी मशहूर हो गया होगा, अुसकी अीमानदारी पर लोगोंका अितना विश्वास जरूर जम गया होगा कि अुसे थोड़ा थोड़ा थोक माल दुकानके लिअे अुधार मिल सके।

अिस कामके बारेमें अिससे ज्यादा सूचनायें यहां मैं नहीं दूंगा। आसपासकी स्थितिकी सावधानीसे जांच करनेकी आदतवाला सेवक हमेशा [illegible] खोज करता ही रहेगा और थोड़े ही समयमें जान लेगा कि अपना गुजर ... सकता
अुसे ...

१२. अेक ग्रामसेवकके प्रश्न

अेक ग्रामसेवक लिखते हैं :

"१. मैं सौ घरके अेक छोटेसे गावमें काम करता हूं। आपने कहा है कि बीमारोंको दवा देनेसे पहले ग्रामसेवकोंको गावकी सफाअी पर ध्यान देना चाहिये। लेकिन बुखारकी तकलीफ भोगनेवाला आदमी मदद मागनेके लिअे सेवकके पास आवे तब सेवकको क्या करना चाहिये? आज तक मैं अैसे लोगोंको गावके बाजारमें मिलनेवाली देसी दवायें काममें लेनेकी सलाह देता आया हूं।

२ बरसातमें मैलेकी क्या व्यवस्था करनी चाहिये?

३ मैलेका अुपयोग क्या सब तरहकी फसलोंके लिअे हो सकता है?

४ शक्करके बदले गुड खानेसे क्या लाभ होता है?"

१ जिस गावमें बुखार, कब्जियत या अैसे दूसरे सामान्य रोगोंके बीमार ग्रामसेवकोंके पास मदद मागने आयें, वहा हो सके तो अुन्हे बीमारोंको दवा देनी ही पडेगी। जहा रोगके निदानके बारेमें कोअी शका न हो वहा गावके बाजारकी दवा बेशक सबसे सस्ती और अच्छी होगी। अगर दवायें पास रखनी ही पड़ें तो अरडीका तेल, कुनैन और अुबला हुआ पानी अच्छीसे अच्छी दवाये हैं। अरडीका तेल तो गावमें ही मिल सकता है। सोनामुखी या सनायकी पत्तिया भी काम दे सकती हैं। कुनैनका अुपयोग मैं कम ही करूगा। हर तरहके बुखारमें कुनैनका अिलाज जरूरी नही होता। हर तरहका बुखार कुनैनसे मिटता भी नही। ज्यादातर बुखार पूरे या आधे अुपवाससे मिट जायगे। अनाज और दूध छोड़नेसे और फलका रस या द्राक्ष — मुनक्के — का अुबला हुआ पानी या ताजे नीबूके रस अथवा अिमलीके साथ गुडका अुबला हुआ पानी लेनेसे आधा अुपवास होता है। अुबला हुआ पानी बहुत ही तेज दवा है। अुसे पीने पर बहुत करके दस्त होगा ही। अुसके पीनेसे पसीना आयेगा और बुखार अुतरेगा। अुबला हुआ पानी छूतको रोकनेकी सबसे सलामत और सस्तीसे

१. ग्रामसेवा और ग्रामसेवक

[सन् १९३४ में गांधीजीकी हरिजन-यात्राके दौरानमें अजमेरकी अेक सभामें पंडित लालनाथ नामक अेक सनातनी शास्त्री पर हमला किया गया था, जिसमें अुनके सिर पर चोट लगनेसे घाव हो गया था। अिसके प्रायश्चित्तके रूपमें तथा अन्य कार्यकर्ताओंकी शुद्धिके लिअे गांधीजीने ७ से १४ अगस्त तक अुपवास किया था। अुपवास पूरा हो जाने पर गुजरात विद्यापीठ (अहमदाबाद) के कुछ कार्यकर्ता विद्यापीठके भविष्यके विषयमें गांधीजीसे चर्चा करने आये थे। गांधीजीने बिस्तर पर लेटे लेटे अुनसे जो बातें की, वे ग्रामसेवा तथा हरिजन-कार्यसे निकट सम्बन्ध रखनेवाली होनेके कारण अुनका सार यहां दिया जाता है।]

चलता-फिरता विद्यालय

शुरूसे ही मैं यह मानता और कहता आया हूं कि विद्यापीठका सच्चा काम तो गांवोंमें है। लेकिन आज तक हम अिसी खयालसे अपना काम करते रहे कि यह कार्य केन्द्रीय संस्थाके जरिये ही चलाया जा सकता है। अब मैं अेक कदम आगे बढनेको कहता हूं। वह यह कि अब हमारा विद्यापीठ गांवोंमें जाकर बसे। गांवोंमें विद्यापीठके जानेका अर्थ क्या है, अिस पर हम विचार करें।

सत्याग्रह आश्रम (साबरमती) को अींट-पत्थरके मकानोंमें से हटा देने या तोड़ देनेका अर्थ यह नहीं है कि आश्रमको तोड़ दिया है। आश्रमवासी जहां भी आश्रमके आदर्शोंका पालन करके रहें वहीं आश्रम खड़ा हो जाता है। अिस तरह कहा जायगा कि आश्रमने व्यापक रूप ले लिया है — वह जगह जगह फैल गया है, अुसने बड़ा रूप ले लिया है। जीती-जागती संस्थाओंका मकसद यह होना चाहिये कि जो व्यक्ति अुनमें तालीम पाकर तैयार हों, वे सब अपने भीतर अुन संस्थाओंको जीवित दे दें। जब अैसे अनेक व्यक्ति हो जाते हैं तब अगर कोअी संस्था मूल रूपमें न रहे तो भी कोअी नुकसान नहीं हो सकता।

[illegible] चाहि। [illegible] बातोंसे वह पढ़ेगा तो [illegible] अुसके [illegible]
[illegible] होगा।

आपकी सफाईसे [illegible] दूसरा महत्त्वपूर्ण काम होगा। आपके रहनेका मकान यह शिक्षा [illegible] देगा कि लोग [illegible] ही करें। परन्तु जिस तरह यह आपका आंगन साफ रहेगा, अुसी तरह लोगोंके आंगन भी साफ करेगा।

सेवक वैद्य या डाक्टर न बने

वह कार्यकर्ता वैद्य या डाक्टर बननेका काम न करे। अेक आश्रमको मैं अपनी अिच्छासे देखने गया। लेकिन वहां मैंने जो कुछ देखा अुससे मुझे गुस्सा आ गया। मैंने व्यवस्थापकों और कार्यकर्ताओंको खूब फटकारा। मैंने कहा "आपने लोगोंको गलत रास्ते चढ़ा दिया है। आप तो यहां अेक बड़ा महल चुनवा कर बैठे हैं। अेक 'ट्रावेलर्स बंगलो' बनवा लिया है। अुसमें दवाखाना भी खोल दिया है। दवावालोंके पाससे मुफ्त दवा पाकर और अेक कम्पाअुण्डर रखकर आपने तो घर घर दवा पहुंचानेका काम शुरू कर दिया है। और मुझे गर्वसे आप कहते हैं कि रोज दूर दूरसे लोग यहां दवा लेने आते हैं और हर माह १२०० बीमारोंको दवा दी जाती है। आप आश्रममें रह चुके हैं। वहां आपने क्या अैसा मकान और अैसा दवाखाना देखा था? मुझे अगर अैसा महल चुनवाना होता या अैसा दवाखाना खोलना होता, तो क्या मुझे पैसे देनेवाले न मिले होते? आश्रमके मकान भी मेरी अिच्छासे ज्यादा खर्चीले बने; फिर भी अिस महलकी बराबरी तो ये कभी कर ही नहीं सकते। लोगोंको अिस तरह दवा देना आपका काम नहीं है। आपका काम तो लोगोंको यह बताना है कि आरोग्यकी रक्षा कैसे की जाय। लोग स्वेच्छाचारी बनकर, गन्दे रहकर और मकानों व गांवोंको गन्दा रख कर बीमार पड़ा करें और आप अुन्हें मुफ्त [illegible] दें, यह अुनकी सच्ची सेवा नहीं है। अुन्हें संयम सिखाना, [illegible] और आरोग्यके नियम सिखाना ही अुनकी सच्ची [illegible] सलाह मानें तो आप अिस मकानको छोड़ दें और [illegible] बस जायें। यह मकान लोकल-बोर्डको किराये पर दे दें

सब सच मच लिखनेकी शक्ति हर आदमीमें नहीं होती। अिसलिअे या तो अुसमें ढोंगका या झूठका प्रदर्शन होता है। अिसलिअे मनके अिन कामकी डायरी रखी जाय या न रखी जाय, अिसका आधार ग्रामसेवककी अपनी शक्ति और अिच्छा पर रहेगा। लेकिन ग्रामसेवकके सेवाकार्यकी नोंध तो पूरी पूरी डायरीमें होनी ही चाहिये। कताअीके सम्बन्धमें केवल 'काता' लिखनेसे काम नहीं चलेगा। काता तो कितने समय तक काता, सूत अुतारनेमें कितनी देर लगी, कितनी बार सूत टूटा, यह सब तफसीलवार लिखा जाय, तो रोज रोज होनेवाली प्रगतिका भी पता चल जायगा। 'रसोअीघरका काम किया' यह सच्ची नोंध नहीं कही जा सकती। वहां बैठ कर गप्पें भी मारी होंगी। अिसलिअे रसोअीघरमें कितनी साग-भाजी काटी, कितनी रोटी बनाअी या कितने लोगोंको परोसा वगैरा तफसील आनी चाहिये। थोड़ेमें, डायरी नीरस नहीं होनी चाहिये, झूठी नहीं होनी चाहिये, अधूरी नहीं होनी चाहिये।"

अेक सवाल दूबला जाति*के लोगोंकी सेवाके बारेमें था। आजकल दूबला लोगोंमें काफी जागृति आ रही है। अुनमें कअी रात्रिशालायें खोली गअी हैं। अिसलिअे अुन लोगोंकी अधिक सेवा और क्या की जाय, अिस बारेमें अेक सवाल पूछा गया। गांधीजीने जवाबमें कहा: "दूबलोंकी सेवा करनेका अर्थ है दूबलों जैसे बन जाना; वे जो कष्ट सहते हैं अुन कष्टोंका अनुभव लेना। लेकिन अिसका यह मतलब नहीं कि वे गंदगीमें रहते हों तो हम भी गंदगीमें रहें या वे जूठन खाते हों तो हम भी जूठन खायें। अिसका अर्थ है अुनके कष्टोंकी जांच करके अुनके दुःखोंसे दुःखी होना, अुनके मालिकोंके साथ मीठा सम्बन्ध बांधना और अुन्हें न्याय दिलानेका प्रयत्न करना।"

आखिरी प्रश्न यह था कि ग्रामसेवक राजनीतिमें भाग ले या न ले। अिसका जवाब देते हुअे गांधीजीने सारी चर्चाका अिस प्रकार अंत किया: "राजनीतिक कामोंके सिवा ग्रामसेवक गांवमें जितने भी प्रश्न हों सबको हाथमें ले। अिससे वह सच्चा राजनीतिक पुरुष बनेगा। वह कांग्रेसका सदस्य तो बने, परन्तु अुसके राजनीतिक कामोंमें न पड़े। बचपनमें

* गुजरातके सूरत जिलेकी अेक आदिवासी जाति।

३. आदर्श गांव कैसा हो?

शांतिनिकेतनमें रहनेवाले 'वीरभूमिके अेक नम्र ग्रामवासी' ने दीनबन्धु अेंड्रूजके द्वारा नीचेके प्रश्न मेरे पास भेजे है:

"१. आदर्श गावके बारेमें आपकी क्या कल्पना है? भारतकी आजकी हालतोंमें अुस कल्पनाके आधार पर किस हद तक गांवोंको नये सिरेसे बनाया और बसाया जा सकता है?

"२. ग्रामसेवक पहले गावके किन सवालोंको हल करनेकी कोशिश करे? और अुसे कामका आरम्भ किस तरह करना चाहिये?

"३. गावके छोटे छोटे प्रदर्शनों और संग्रहालयोंमें खास तौर पर *कौनसी चीजें होनी चाहिये? गावोंकी नये सिरेसे रचना* करनेके लिअे अैसे प्रदर्शनोंका अच्छेसे अच्छा अुपयोग कैसे हो सकता है?"

१ भारतके आदर्श गावकी रचना अैसी होगी जिसमें गावको पूरी तरह साफ-सुथरा रखनेकी सुविधा हो। अुसमें झोंपड़ियोंकी रचना अिस ढगसे की जायगी कि अुनमें काफी हवा और काफी अुजेला आ सके। ये झोंपडिया आसपास पाच मीलके घेरेमें मिलनेवाले साधनोंसे बनी होंगी। झोंपड़ियोंके आसपास खुला अहाता होगा, जिसमें वहा रहनेवाले अपनी जरूरतकी साग-सब्जी अुगा सकें और अपने ढोरोंको रख सकें। गावके रास्ते और गलियोंको भरसक बिना धूलका बनानेकी कोशिश की जायगी गावमें पानीकी जरूरत पूरी हो सके अितने कुअें होंगे और गावके सब लोग अुन पर आजादीसे पानी भर सकेंगे। आदर्श गावमें सबके लिअे पूजा और अुपासनाके स्थान होंगे, अेक सभा-भवन होगा, ढोर चरानेके लिअे चरागाह होंगे, सहकारी ढगसे चलनेवाला दूधघर होगा, अुद्योगकी शिक्षाको केन्द्रमें रखकर चलनेवाली प्राथमिक और माध्यमिक शालायें होंगी और गावके झगडे निबटानेके लिअे अेक पचायत होगी। गाव अपनी जरूरतका अनाज, दालें, साग-भाजी और फल खुद पैदा कर लेगा। और कपड़ेके लिअे जरूरी खादी भी वह खुद ही तैयार कर लेगा।

३ गांवके हर प्रदर्शनमें चरखेका मुख्य — केन्द्रीय — स्थान होना चाहिये। और हर गांवमें जो अुद्योग सुविधासे चल सकें वे अुसी तरह चरखेके आसपास घूमने चाहियें, जिस तरह सूर्यके आसपास ग्रह घूमते हैं। अिस तरह जमाया हुआ प्रदर्शन कुदरती तौर पर गांववालोंके लिअे अेक सबक बन जायगा। और जब अैसे प्रदर्शनके साथ लोगोंको हर अुद्योगका प्रयोग करके दिखाया जाय, भाषण दिये जायं और पत्रिकाअें भी रखी जायं, तब तो लोगोंको बड़ा आनन्द आयेगा और शिक्षा भी मिलेगी।

हरिजनबंधु, ३१-१-'३७

४. हमारे गांवोंकी हालत

अेक नौजवान गांवमें रहकर अपना गुजर चलानेकी कोशिश कर रहा है। अुसने मुझे अेक दुःखभरा पत्र लिखा है। अुसका सार मैं नीचे देता हूं :

"तीन वर्ष पहले, जब मेरी अुमर २० वर्षकी थी, मैं अिस गांवमें आया था। अुसके पहले १५ वर्ष तक मैं शहरमें रह चुका था। मेरे घरकी आर्थिक स्थिति अच्छी न होनेसे मैं कालेजमें पढ़ने नहीं जा सका। आपने गांवोंके अुद्धारका काम आरम्भ किया अुससे मुझे गांवमें आकर रहनेका बढ़ावा मिला। मेरे पास थोड़ीसी जमीन है। मेरे गांवकी आबादी लगभग ढाअी हजारकी है। अिस गांवके लोगोंके बीच रहने और अुनके गहरे सम्पर्कमें आनेके बाद अुनमें से पौने भागके लोगोंमें मुझे नीचेके अवगुण दिखाअी दिये :

१. दलबन्दी और झगड़े; २. आपसी जलन और बैर; ३. निरक्षरता/शिक्षाका अभाव; ४ दुष्टता; ५. फूट; ६. लापरवाही; ७. सभ्यताका अभाव; ८ पुराने, बेकार और हानिकारक रीति-रिवाजोंका आग्रह; ९ कठोरता।

"यह गांव अेक कोनेमें पड़ा है। अिस गांवमें कोअी बड़े नेता कभी नहीं आये। महापुरुषोंका सत्संग मिले तो आदमीको

काम छोडे नहीं। धीरज रखकर प्रयत्न करनेसे मालूम होगा कि गावके लोग शहरके लोगोंसे बहुत अलग नहीं होते। अुनके साथ भी प्रेम और ममताका बरताव किया जाय, तो अुसे वे लोग समझते हैं, अुसकी कदर करते हैं और अुसके लिअे आभार मानते हैं।

गावमें देशके बडे नेताओंके सम्पर्कमें आनेका मौका नहीं मिलता यह बात सच है। जैसे जैसे ग्रामसेवाकी भावना और रुचि बढती जायगी, वैसे वैसे नेताओंको गावोंमें घूमने और अुनके सीधे सम्पर्कमें आनेकी जरूरत महसूस होगी। अिसके सिवा, चैतन्य, रामकृष्ण परमहंस, तुलसीदास, कबीर, नानक, दादू, तुकाराम, तिरुवल्लुवर और दूसरे अितने ही प्रसिद्ध और पवित्र सन्तोंकी रचनाअें पढकर हर आदमी महापुरुषों और सन्तोंका सत्सग पा सकता है। कठिनाअी मनको मोड़कर अैसे ढंगसे तैयार करनेकी है, जिससे वह सनातन सत्योंको समझ सके और अुन्हें पचा सके। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक क्षेत्रके नये विचार जाननेकी अिच्छा हो, तो यह साहित्य भी काफी मात्रामें पढनेको मिल सकता है। अितना मैं जरूर कबूल करता हूं कि धार्मिक साहित्य जितनी आसानीसे मिलता है, अुतनी आसानीसे यह दूसरा साहित्य नहीं मिलता। सन्त तो साधारण जनताके लिअे लिखते और बोलते थे। नये विचारोंको आम जनता समझ सके अिस प्रकार अुन्हें हमारी भाषाओंमें अुतारनेका प्रयत्न अभी शुरू नहीं हुआ है। परन्तु अैसा प्रयत्न होना ही चाहिये। अिसलिअे अिस पत्रलेखक जैसे दूसरे नौजवानोंको मेरी सलाह है कि वे अपना काम धीरज और लगनसे करते रहें और अपनी हाजिरीसे गावोंको अधिक रहने लायक और अधिक आकर्षक बनायें। अपना यह काम वे ग्रामवासियोंकी पसन्दकी सेवा करके कर सकते हैं। हर ग्रामसेवक अपनी मेहनतसे गावको अधिक साफ-सुथरा बनाकर और भरसक अुसे पढना-लिखना सिखाकर अपने सेवाकार्यका आरम्भ कर सकता है। और, ग्रामसेवकोंका जीवन अगर शुद्ध, अुद्यमी और व्यवस्थित होगा, तो वे जिन गावमें काम करते होंगे अुसके लोगों पर अुसका प्रभाव अवश्य पड़ेगा।

हरिजनबंधु, २१-२-'३७

हमारी अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

अहिंसक समाजवादकी ओर	१.००
खादी	२.००
नअी तालीमकी ओर	१.००
बुनियादी शिक्षा	१.५०
मंगल-प्रभात	०.३७
मेरे सपनोंका भारत	२.५०
यरवडाके अनुभव	१.००
विद्यार्थियोंसे	२.००
शिक्षाकी समस्या	२.५०
सच्ची शिक्षा	२.००
सर्वोदय	२.००
स्त्रियां और अुनकी समस्याअें	१.००
हिन्द स्वराज्य	०.७०
धर्मोदय	१.२५
संसार और धर्म	२.५०
स्त्री-पुरुष-मर्यादा	१.७५
बापूकी छायामें	४.००
गांधीजीकी साधना	३.००
हमारी बा	२.००
अेकला चलो रे	२.००
बिहारकी कौमी आगमें	३.००
शराबबन्दी क्यों?	०.६२
आश्रम-भजनावलि	०.५०

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद–१४